दिव्य आदेश

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहांपुर, उ. प्र. (भारत)

दिव्य आदेश

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर
दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी
साहब फ़तहगढ़ी, जिला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 10 मई लग़ायत 18 जुलाई, 1944 ई०

प्रथम संस्करण- **1999 - 1100** प्रतियां

© श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्यः **Rs. 50/-**

प्रकाशक :

प्रकाशन विभाग,

श्री रामचन्द्र मिशन,

शाहजहांपुर, उ. प्र. (भारत)

मुद्रक :

वैरा प्रिन्टर्स, **B-165**, पाण्डव नगर, दिल्ली- **110092**

प्रस्तावना

यह हमारे सौभाग्य की बात है कि हमें एक महान हस्ती के कुछ संदेशों को एक किताब के रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिला। यह **दिव्य संदेश** जो हमारे पूज्य बाबूजी महाराज को एक आदेश के रूप में मिले अगर उन सबको अपनी बुद्धि से सोचें तो यह प्रतीत होता है कि हमारे बाबूजी महाराज क्या हैं और किस-किस महान शक्तियों की प्रेरणा से उन्होंने सहज मार्ग की स्थापना की और मानव समाज के उद्धाधार के लिये जीवन पर्यान्त कार्यरत रहें। बाबूजी अपने जीवन में यह हमेशा कहा करते थे कि एक स्पेशल पर्सनालिटी का जन्म हो चुका है और उसके माध्यम से आध यात्मिक भावी दुनियाँ की अवरचना होगी। यहाँ तक कि उनके संदेशों में महाप्रलय तक की बात कह दी गयी है और यह समय ही बताएगा कब इसका प्रारम्भ होगा। यह संदेश कोई मामूली संदेश नहीं हैं बल्कि आगे आने वाली पीड़ी के लिए एक अनौखा संदेश है। हम सब को जीवन और मृत्यु की पहचान अभी से बना लेनी चाहिए। मनुष्य के जीवन में कितनी कठिनाईयाँ आती हैं जिनको भोगते हुए अनेकों जीवन बीत जाते हैं। उस जीवन मृत्यु के चक्र के बन्धन से कैसे छुटकारा मिले। यह हमारे पूज्य बाबूजी महाराज ने एक मार्ग दर्शाया जिस को 'सहज मार्ग' का नाम दिया। यह एक ऐसा मार्ग है जिससे इन्सान को जीवन और मृत्यु से छुटकारा मिल सकता है, और वह मोक्षा प्राप्त कर सकता है, मगर यह सब पाने के लिए हर अभ्यासी को अपना प्रयत्न जारी रखना है, बताये हुए उसूलों पर चलना है जिसमें भक्ति (Devotion), विश्वास (Faith) और आत्म समर्पण (Surrender) का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्वास एक ऐसी चीज है जो हर इन्सान की (thinking) विचारधारा को बदल देती है और जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं, उस पर दृढ़ विश्वास हो जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक, जिसका नाम **'दिव्य आदेश'** दिया गया है, उन संदेशों पर (Messages) आधारित है, जो डैरेक्ट हमारे बाबूजी महाराज को conscious state में दिये गये और अपनी जिन्दगी में उन्होंने अपने हाथों से डायरी में लिखे जो कि कई भाषाओं में लिखे हुए हैं। उसका रूपांतरण उर्दू के जानने वाले एक अच्छे अभ्यासी

श्री मदन मोहन गुप्ता जी के प्रयासों से किया गया, और यह पुस्तक उनके प्रयासों के वजह से आपके सामने इस शताब्दी वर्ष के सुअवसर पर प्रस्तुत करने में समर्थ हुए। साथ ही कम्प्यूटर चलाने वाले श्री पुनीत कुमार सक्सेना, श्री सुनीत कुमार सक्सेना, श्री गुरु प्रसाद तथा श्रीमती अमिता कुमारी के पारिश्रमिक सहयोग से संभव हुआ है। प्रस्तुत किताब के खूब-ब-खूब original script के तर्जुमें को सामने रक्खा गया है और इसमें किसी प्रकार का विचार परिवर्तन और नाही उनके शब्दों में परिवर्तन change किया गया है। इसमें से कुछ अंश ऐसे हैं जिसे हम छाप नहीं सकते और जिसे छापने से समाज में revolution पैदा होने का डर हो सकता है। चूंकि हमारा सहज मार्ग जात-पात, distinction in colour में विश्वास नहीं रखता है। हर जाति के लोग हमारी संस्था (system) में प्रवेश पा सकते हैं और हमारे सहज मार्ग से लाभान्वित हो सकते हैं। हमारी संस्था में लोग ना हीं किसी मजहब या धर्म की बात करते हैं ना ही किसी मजहब की हमारे यहाँ प्रधानता है। हमारे गुरु महाराज महात्मा रामचन्द्र जी ने एक Universal brotherhood, harmony का संदेश दिया है और हमारी यही कोशिश है कि हर भाई-बहन में भाईचारे की भावना पैदा हो और हमारे सहज मार्ग से जुडें और आत्म साक्षात्कार तथा ईश्वर साक्षात्कार का उन्हें ज्ञान हो सके। आधुनिक युग में कोई भी प्राणी बिना आध्यात्मिक सहायता के दिन-प्रतिदिन के जीवन को उचित रूप से चलाने में असमर्थ है। अब जो युग आने वाला है वह एक मुश्किलों का प्रतीक है और हर इन्सान को अब कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। इन कठिनाईयों का सामना करने में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

इसलिए यह हमारा सुझाव है कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना जरूरी है और यही एक मार्ग है जो आप को शांति पथ पर अग्रसर कर सकता है, गुरु जी महाराज के आशीर्वाद की सहायता से।

यह दिव्य आदेश 12 वाल्यूम में सबके सामने प्रस्तुत होंगे और कोशिश यह है कि यह 12 वाल्यूम 6 साल में लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकें। यही हमारी कोशिश है।

उमेश चन्द्र
अध्यक्ष
श्री राम चन्द्र मिशन

इश्तिहार (ऐलान)

मीरासे-पिदर ख़्वाही, इल्में पिदर आमोज़

(यदि पिता की जायदाद की इच्छा है, तो उस की विद्या भी सीखो)

प्रेमी भाईयो!

आप साहिबान की ख़िदमत में हज़रत क़िब्ला श्रीमान महात्मा रामचन्द्र जी साहब, मुत्वत्तिन फ़तहगढ़ कैम्प के रहन-सहन की बाबत मुख़्तसर्न अर्ज़ है। उम्मीद कि मुहब्बान व पैरवान-हज़रत क़िब्ला, बतव्वजोह खास अमल फ़रमायेंगे, ताकि खुद फ़ायदा उठावें और दूसरों को अपने अमल से फ़ायदा उठाने का ज़रिया बनें।

मकूला= हज़रत क़िब्ला का उसूल अव्वलीन यह था कि जो क़ौल, वह फ़ेल, और जो फ़ेल, वह क़ौल; यानी ज़ाहिर बातिन यकसाँ होना। इख़्लास और इख़्लाक़ लवाज़माते फ़क़ीरी में ज़रूरी हैं। मगर आप साहिबान नज़रे-ग़ायर से, सवानेह-हयात जनाब इज़रत क़िब्ला पर निगाह डालेंगे तो उसूल मज़कूर का अमल-दरामद मुकम्मिल पावेंगे। याद ताज़ा कराने के वास्ते मुख़्तसर्न अर्ज़ है। पोशिश निहायत सादा और साफ़। खाना, लवाज़माते-निफ़सानियत से मुबर्रा और पाक इस्तेमाल किया।

मीरास= वह जायदाद जो मरने वाले की तरफ़ से हक़दारों को मिले। **पिदर=** बाप, पिता। **ख़्वाही=** इच्छा रखना। **आमोज़=** सीखना। **मुख़्तसर्न= संक्षेप में,** Briefly **मुहब्बान=** प्रेमी, Lovers; **मुत्वत्तिन=** रहने वाला, बाशिन्दा **पैरबान=** अनुसरन करने वाले (Followers) **मकूला=** क़ौल, कही हुई बात, Dissertation, The sacred words; **अव्वलीन=सर्व प्रथम, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ** First & foremost; **जो क़ौल वह फ़ेल** ....जो कहना वह करना और जो करना वह कहना। **इख़्लास=** मैत्री, निस्वार्थता। **इख़्लाक़ (या अख़्लाक़) =** शिष्टाचार, सदाचार सद्व्यवहार, **लवाज़मात=** सामान ज़रूरी चीज़े। **नज़रे ग़ायर=** गहरी नज़र। **मज़कूर=** कथित। **सवानेह हयात=** जीवन चरित्र, जीवनी, Life history; **पोशिश=** पहनावा। **लवाज़माते निफ़सानियत=** मन को उत्तेजित करने वाली चीज़ें। **मुबर्रा=** Free आज़ाद, निर्लिप्त।

खुद्दारी:- कभी किसी दोस्त, अहबाब, प्रेमी से किसी चीज़ की फ़रमाएश नहीं की। अपने नफ़्स पर तकलीफ़ गवारा की मगर किसी से सवाल न किया। और **हज़रत बू अली शाह क़लन्दर** के मकूले पर कारबन्द रहे।

गर ब-फ़ाक़ा जाँ बरआयद अज़ क़फ़स,
चूँ मगस पन्जाये मतरन बर ख़्वान् कस।

(**अर्थात=** यदि भूख (उपवास के कारण) से जान भी निकल जाये तो भी दूसरे के खाने पर, मक्खी की तरह पंजा मत मार।)

इस्तग़ना की यह कैफ़ीयत थी कि, शेर=

पुश्त पाज़न तख़्त कैकाउस रा,
सर ब-देह अज़कफ़ मदेह नामूस रा।

(**अर्थात=** (बादशाह) कैकाउस के तख़्त (राज्य) को पैर के तल्वे की ठोकर मार दो। सर दे दो किन्तु अपने हाथ से अपनी शोहरत (इज़्ज़त, आबरू, नेक नाम) न जाने दो।)

वसीयत के अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा फ़रमाइये, "मेरे पास एक पैसा नहीं है, लेकिन मैं वो दौलत छोड़ता हूं, जो शाहों को भी नसीब नहीं।" क्या शाने इस्तग़ना है। भाईयो! ग़ौर करो और हत्तुलमक़दूर अमल करो।

कारबन्द रहे= अमल में लाते रहे। **इस्तग़ना=** बेपरवाई, बेफ़िकरी, बेनियाज़ी **खुद्दारी=** ग़ैरत self respect; **हत्तुलमक़दूर=** जहां तक हो सके।

मीरासे पिदर ख़्वाही, औसाफ़े पिदर आमोज़

(यदि बाप की जायदाद चाहिये तो बाप के गुणों को भी सीखो।)

मकूला:- ख़ुदा मुजस्सिम मुहब्बत है।

अमल:- हज़रत क़िब्ला के फ़ैज़ान मुहब्बत का यह हाल था कि हर प्रेमी भाई को यह दावा था कि लाला जी क़िब्ला मुझको सब से ज़्यादा प्यार करते हैं। यह मुजस्सिम मुहब्बत की दलील है।

मकूला= ईश्वर समदर्शी है।

अमल= हज़रत क़िब्ला ग़रीब से ग़रीब प्रेमी से उसी अख़लाक़ व मुहब्बत से पेश आते थे जिस मुहब्बत और अख़लाक़ से वह रईस से रईस प्रेमी से पेश आते थे।

मकूला= ख़ुदा परदा पोश है।

अमल= हज़रत क़िब्ला बावजूद काशिफ़े **इस्रार** होने के, कभी किसी को ऐब ज़ाहिर नहीं करते थे। अलबत्ता उसके ऐब को दूर करने की **सई** करते थे।

मकूला= सिद्धी और शक्ति बायसे गिरावट हैं।

अमल= हज़रत क़िब्ला बावजूद साहबे करामत होने के कभी इज़्हार न करते थे और न उनका सरज़द होना दलीले बुज़र्गी समझते थे। लेकिन वक़्ते ज़रूरत प्रेमियों के दर्द, दुख, साधारण दैनवी तरीक़े से रफ़ा कर देते थे ताकि उस को इल्म तो दरकिनार, शुबह भी न हो।

फ़ैज़ान मुहब्बत= कृपा पात्र। **काशिफ़े इस्रार=** पोशीदा बातों (भेदों को खोलने वाला), **सई=** प्रयत्न, कोशिश। **साहिबे करामत=** जिस में करामात (Miracles) दिखाने की ताक़त हो।

मकूला= इबादत बजुज़ ख़िदमते ख़ल्क़ नीस्त।

(अर्थात= पूजा जन साधारण (संसार के लोगों) की सेवा के अतिरिक्त कुछ नहीं है।)

अमल= हज़रत क़िब्ला हरेक अहबाब, प्रेमी, अज़ीज़ व यगाना की ख़िदमत के वास्ते कमरबस्ता रहते थे। मेरे इल्म में है कि ख़ुद क़र्ज़ लेकर दूसरों की इमदाद की और ज़रूरत पूरी की।

मकूला= रियाज़त ब-पोशीदन दल्क़ नीस्त।

(अर्थात= तपस्या गुदड़ी पहनने में नहीं है।)

अमल= हज़रत क़िब्ला को जो कपड़ा मयस्सर हुआ, पहन लिया। और जहां जगह मिली बैठ गये। न कभी अज़ख़ुद कोई जगह निशस्त की अपने वास्ते मख़सूस की और न किसी क़िस्म की पोशिश।

मकूला= हर के ख़िदमत कर्द और मख़दूम शुद।

(अर्थात= जिस किसी ने सेवा की वह मालिक (सेवा कराने वाला) बन गया।)

अमल= हज़रत क़िब्ला ने हस्बुल इरशाद हज़रत क़िब्ला दादा पीर साहिब रहमतुल्लाहु अलैही, ता-ब-ज़ीस्त राम नाम का प्रचार किया और अपना ख़ून पानी की तरह बहा कर बाग़ सींच कर तैयार किया, और ता-ब-ज़ीस्त सींचते रहे। क्या हमारा फ़र्ज़ नहीं है कि अगर हम अपनी नाक़ाबलियत से उसको ज़्यादा रौनक़ न दे सकें तो कम से कम उसको बरक़रार तो रखें और इस तरीक़े-अमल से ख़ुश्नूदी व ख़िदमत पीर करें।

रियाज़त= तपस्या, आराधना, इबादत। **दल्क़=** गुदड़ी, पशमीने का लिबास जो फ़क़ीर पहनते हैं। **अज़ख़ुद=** स्वयं। **निशस्त=** बैठक, कुर्सी, बैठने की जगह। **मख़दूम=** ख़िदमत किया गया, बुज़ुर्ग, आक़ा, मालिक, क़ाबिले ताज़ीम, सेव्य, मुरब्बी, वली-नेमत।

मकूला= ख़ुदा ऐब पोश है।

अमल= हज़रत क़िब्ला कभी किसी मुरीद की ग़लती पर न नाख़ुश हुये, न मलामत की और न तादीब की। बल्कि उसको अपनी ग़लती मान कर बारेताआल्ला से दस्त-ब-दुआ हुये और मुआफ़ करा दिया। सुब्हान अल्लाह। इस क़दर ऐब पोशी कि किसी भाई के सामने तक हर्फ़-शिकायत ज़बान पर न आया बल्कि उस की ख़ूबियों का ज़िक्र किया।

मकूला = बा अदब, बा नसीब।

(**अर्थात=** अदब करने वाला (सभ्य, शिष्ट) खुश नसीब (सौभाग्यशाली) होता है।)

अमल= हज़रत क़िब्ला ने कभी किसी बुज़ुर्ग के या कभी किसी मज़हब व मिल्लत की मुज़म्मत नहीं की बल्कि हमेशा ताज़ीम व तकरीम से तज़किरा किया। जो बुज़ुर्ग आया उस को अपनी जगह या अपने से बेहतर जगह बिठाला और ख़िदमत के वास्ते मोअद्दब सामने बैठ गये।

मकूला= हर च ख़्वाही कुन, दिलाज़ारी मकुन।

(**अर्थात=** चाहे कुछ भी करो मगर किसी का दिल न दुखाओ।)

अमल= हज़रत क़िब्ला ने कभी कोई कल्मा ज़बान से ऐसा सख़्त न निकाला जिससे दूसरों को रंज पहुंचे। अगर ज़रूरतन् कोई नसीहत की तो मुहब्बत और प्रेम के साथ।

तादीब= तन्बीह करना, अदब सिखाना, शिक्षा देना, दण्ड देना। **बारेताआल्ला=** बुज़ुर्ग व बरतर परमात्मा। **दस्त ब दुआ हुये=** हाथ उठा कर प्रार्थना की। **मज़हब व मिल्लत=** दीन, धर्म, समप्रदाय। **मुज़म्मत=** आलोचना, निन्दा। **ताज़ीम व तकरीम=** सम्मान और आदर सत्कार। **मोअद्दब=** नम्रतापूर्वक, अदब के साथ। **कल्मा=** वाक्य, शब्द।

चूँकिः- हज़रत क़िब्ला के परदा कर जाने के बाद से भाईयों में आपस में शकररंजी और वसवसात पैदा हो गई हैं। इसलिये मुख़्तसरन् सवानेहयात हज़रत क़िब्ला लाला जी साहिब की तरफ़ तवज्जोह मब्ज़ूल कराता हूं। आप साहिबान ग़ौर करें और हत्तलमक़दूर आमिल बनने की कोशिश करें। बफ़ज़्ले ख़ुदाई बरतर व बरहक़ उम्मीद कि बाग़ नसब करदा हज़रत क़िब्ला वैसा ही सरसब्ज़ व शादाब हो जावेगा। और ख़ूब बारआवर होगा।

"कारसाज़े मा बफ़िक्रे कारे मा।"

(**अर्थात=** जो हमारे कर्मों की पूर्ति करता है, वह हमारे कर्मों की भी फ़िक्र करता है।)

आमीन! सुम आमीन!

यके अज़ख़ादमाँ, शाहजहाँपुर

(मतबूआ-मदन प्रेस, मोती चौक, शाहजहाँपुर)

शकर-रंजी= अनबन, मामूली सी रन्जिश। **वसवसात=** अन्देशे। **आमिल=** अमल करने वाला। **तवज्जोह मब्ज़ूल कराना=** ध्यान आकर्षित कराना। **आमीन=** एवमस्तु। **सुम आमीन=** पुनः एवमस्तु।

786

किताब मौसूमा दिव्य आदेश

याददाश्त, इन्कशाफ़ात व वारदात व हिदायात बग़रज़ पाबन्दी जोकि श्रीमान भाई रामचन्द्र जी साहब को हज़रत क़िब्ला पीर दस्तगीर महात्मा रामचन्द्र जी महाराज फ़तेहगढ़ी ने कीं।

10 मई सन 1944 ई.

ख़्वाब में फूफाजी को देखा कि उन्होंने मुझको तीन झटके दिए। उनके झटके सब अंदर ही अंदर रहे। उसके बाद अपने दाहिने हाथ का अंगूठा मेरे दाहिने पैर के अंगूठे पर रखा और सलब करना चाहा मगर कुछ न कर सके। उस वक़्त मेरी बे-कैफ़ी की हालत थी। उसके बाद कहा कि तुमको 15 यौम के अन्दर ठीक कर दूंगा। ख़्याल हुआ कि सैफ़हाए चिश्तिया से काम लेंगे।

11 मई 1944 ई.

सबुह को नहाते वक़्त ख़्याल पैदा हुआ कि हज़रत क़िब्ला लाला जी साहिब की कोई बात नक़ल करना चाहिए। इरशाद हुआ "कि तुमने मेरी अंदरूनी हालत की नादानिस्ता नक़ल की है। यह क़ाबलियत किसी में नहीं है।" ख़्याल आया कि फ़तेहगढ़ में समाधि पर गाने की मुमानियत है। क्या उसकी पांबदी करना चाहिए। इरशाद हुआ "कि जब किसी जगह पर जाइए तो उसके मालिक या मोहतमिम के कानून की ख़्वाह

सही हों या ग़लत, पाबंदी करना चाहिए। तुमको अपने यहां के सतसंग में मुमानियत नहीं। खुलने पर (यानी तुम्हारे मरतबा-आला के इज़हार होने पर) लोगों को तुमको मानना पड़ेगा। **तुम्हारी कैफ़ियत ख़ुद उनसे मनवा लेगी।** जो ख़्याल उन लोगों में डालोगे, वैसी ही तामील सतसंगी लोग करेंगे।" (मुझ को) कानपुर जाने की मुमानियत की गई। पहले नहीं थी। "अगर इत्तफ़ाक़ पड़े तो फूफाजी के यहां न जाना। **तुम जब मुनासिब समझो, जिसकी ताक़त चाहो सलब कर सकते हो।** बे-ख्वाहिश हो गए हो, इसलिए (ज़ुबान से) अलफ़ाज़ (Guarded) गार्डिड निकलना चाहिए। न किसी की अच्छाई के लिए कहो, न बुराई के लिए। चूंकि तुम्हारी सब बन्दिशें (यानी क़यूद जिस्मानी) टूट चुकी हैं, इसलिए बहुत संभल कर रुजूअ हुआ करो। पूरी ताक़त से कभी रुजूअ न होना। जैसी ग़लती कर चुके हो। **तुम इस बात पर अमल करो कि न अच्छी बात से खुश, न ख़राब बात से नाखुश।**

18 मई सन 1944

(वक़्त दरमियान 10 व 12 बजे दिन)

तुम्हारी नामवरी से बाबू मदन मोहन लाल की भी नामवरी होगी। उनको यह अफ़सोस नहीं होगा कि मैं किसी को बना नहीं पाया। उनकी ज़ाहिरी इताअत मत छोड़ना। बातन में तुमको इख़्तयार है।

ऑर्गेनाइज़ेशन (Organisation) तुमको करना होगा। तुम्हारा जो ख़्याल होगा वो मेरा ख़्याल होगा और सही होगा। **मेरी मिस्किनी की आदत तुम ज़रूर रखना। मेरी सिफ़्त मस्किनी तुम मत छोड़ना और तरीक़े शाहाना रखना।** तुम (R.C.) उनकी (**मदन मोहन**) की कम-हिम्मती के जिम्मेदार हो। तुमको सख़्ती करना पड़ेगी नरमी की आदत छोड दो। मैं जैसा चाहूंगा तुम वैसा ही करोगे। चूंकि बाबू मदन मोहन लाल को बेटा समझता हूं, लिहाज़ा इस बात का ख़्याल करके काम करें तो हिम्मत आ जावेगी। शेर का बेटा शेर होता है। जिसको मैंने बेटा माना वह भी शेर है और बड़ा बच्चा (Son) है। बाक़ी सब औलाद हैं। कानपुर का असर अब बाबू मदन मोहन लाल में बिल्कुल नहीं रहा। बुरा वक़्त गुज़र गया। अच्छा वक़्त आ गया मैं उनकी हिफ़ाज़त का जिम्मेवार

हूं। अब वो तंदरुस्त हो जावेंगे। उनको अपनी हालत की खबर नहीं, उनका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता।

सवाल मिन-जानब मदन मोहन लाल- "मैंने क्या ग़लती की जिसकी वजह से उनका (चचाका) खराब ख़्याल मुझ पर असर कर गया।"

इरशाद हुआ- "जिनको दिल दिया उनका परशाद (प्रसाद) नहीं पाओगे। कह दो, मगर घबराओ नहीं, अब असर बिल्कुल नहीं। उनका (मदन मोहन) कोई नुक़सान नहीं हुवा। मगर तकलीफ़ ज़रूर बढ़ गई।

सवाल मदन मोहन "मुरीद को पीर से इश्क़ कैसे बेइंताह हो सकता है?"

इरशाद हुआ= "तसव्वुरे पीर से।"

वक़्त शाम तारीख मज़कूर

तुम्हारे बारे में उन्हें (नन्हे को) अंदाज़ा था कि मुमकिन है किसी वक़्त हमसे मुठभेड़ लें। मेरे पास तुम्हारा आना उन्हें अच्छा नहीं मालूम होता था। जब कुछ बस न चला तो तुम्हारे वास्ते मौलवी साहब क़िब्ला (यानी हज़रत क़िब्ला मौलाना फज़ल अहमद खाँ साहब (रहम०) से प्रार्थना की गई कि तुमको तरक़्क़ी से महरूम रखा जावे। **यह बात उनको बहुत नागवार हुई और नाखुशी का बायस हुई** तुम्हारी तजदीदे-बैअत की कोशिश की गई और तुमको क़िस्से सुनाए गए। उनके (कानपुर वालों) खिलाफ कार्रवाई बाइजाज़त हज़रत मौलवी साहब क़िब्ला (रहम०) की गई। हज़रत मौलवी साहब क़िब्ला (रहम०) की मज़ार पर जब वक़्त मिले ज़रूर जाना।

"बाबू मदन मोहन लाल की बाबत उनको (नन्हे को) इतमिनान था कि वो कुछ नहीं कर सकते क्योंकि उनका (नन्हे का) तीर लग चुका था।

तुम्हें गिराने के लिए हर वक़्त ग़ल्ताँ व पेचाँ थे और मैं हर वक़्त तुम्हारी हिफ़ाज़त करता था। तुम्हें ख़्याल से ज़िनां करने पर राग़िब किया गया। जब कुछ बस न चला तो नंगी औरतों की तस्वीरें दिल में घुसेड़ी गईं। **नंगी औरतों का तुम्हारे अन्दर** (दिल में) **जो नक़्शा खैंचा गया था उससे तुम इस वजह से बचे कि तुमने सब कुछ मेरे ऊपर**

छोड़ दिया था। चूंकि तुम क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) के मंजूरे नज़र हो चुके थे, इसलिए कुछ बस न चला। एक औरत और तुमको ख़्याल में क़ायम करके तुमसे ज़िनां कराया गया ताकि यह हरकत तुमसे भी सरज़द हो जावे। यह उनकी आख़िरी कोशिश थी। बुलन्दशहर वाली औरत को इसलिए शग़लेराब्ता बतलाया गया था कि उसकी तबियत मेरी (नन्हे) तरफ़ राग़िब हो जावे।

वो घर (मुन्शी रघुबर दयाल का घर) अब बहु-बेटियों के रहने लायक़ नहीं रहा। तुम्हारे घटाने की और ब्रज मोहन के बढ़ाने की कोशिशें और दुआएं की गईं। तुम्हारे गिराने की इतनी कोशिश की और यह ख़्याल तक न आया कि ईशर (ईश्वर) की मरज़ी आख़िर को पूरी हो कर रहती है।

तुम्हें यह बातें इसलिए बतलाई गईं ताकि तुमको रहम न आवे। मैं उनको तीन मरतबा बशारत दे चुका हूं।

19.5.1944

आज वहां का मामला खत्म कर दो। मैंने तीन दिन की मोहलत दी थी। उस काम के ख़ातमे के बाद दूसरे काम करो। इस काम से निपट कर श्रीकिशन का ख़ास ख़्याल रखना। औरतों से उनकी मोहब्बत बढ़ रही है। मैंने उनको बड़े नाज़ से पाला है। जितने मेरे हाथ पर बैअत हैं, मैं उनका जिम्मेवार हूं। जब तुम जिम्मेवारी अपने हाथ में ले लोगे तब मुझे चैन आवेगा।

करूणाशंकर को जो कुछ तुमने दिया है, उसको हज़म कराने की कोशिश करो। आईन्दा ऐसी ग़लती मत करना। जो ज़रा निगाह और फिर जाती तो उनका दिमाग़ Upset अपसेट हो जाता। कल जो कुछ तरीक़ा तुमने बतलाया है, उसमें तुमने जल्दी कर दी। उसको हज़म कराने के बाद बतलाना था।

डा. श्रीकृष्ण औरतों की तादाद मोहब्बत के साथ बढ़ाने की कोशिश करते हैं गोया जूते को मख़मल में लपेटते हैं। **फ़क़ीर को मोहब्बत किसी से नहीं होती।** उनको **(श्रीकृष्ण)** अक्सर औरतों का, जिनको वो तालीम देते हैं तसव्वुर रहता है। जिस क़दर खूबसूरत औरत होती है उसी क़दर उनकी तब्बजो (तवज्जह) की धार ज़्यादा जाती है।

श्रीकृष्ण का ख़्याल कि मैं (हज़रत क़िब्ला लालाजी साहिब) हुस्न परस्त था। मैं हुस्न परस्त नहीं था, बल्कि नन्हे (रघुबर दयाल) में हुस्न परस्ती थी। **मैंने जहां देखा अपने दोस्त ही को देखा। तुम भी ऐसा ही करना।** मैंने **नन्हे** के हवासों को अपने आप में लय (फ़ना) कर लिया था ताकि उनसे गुनाह सरज़द न हों। उनको (नन्हे) को बिल्कुल बेक़ाबू कर दिया था ताकि वो गुनाह न कर सकें। अगर क़िब्ला मौलाना साहब (रहमतुल्ला) की सोहबत न मिलती तो (नन्हे) अव्वल दर्जे के ऐयाश होते। दूसरे फ़ज़ल यह था कि रुपया पास न था। मुझमें मेरी मां का असर था और उनमें वालिद का असर आया था।

जब तुम्हारी डायरी (छपने के वास्ते) लिखी गई तो तुम्हारा नाम उसमें नहीं रखा गया। यह **प्रभुदयाल** की नालायक़ी थी और **नन्हे** की उस्तादी कि ऐसा न हो कि लोगों का रूझान तुम्हारी **(RC)** तरफ़ हो जावे और उनकी रोटियों के लाले पड़ें। यह उन अन्धे (नन्हे) के ख़्याल में न आई कि–

"मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है।
वही होता है जो मंजूरे ख़ुदा होता है।"

नोटः- (R.C.) = अपना सीना चीर कर दिखलाया (जिसकी कैफ़ियत अभी तक तारी है)। उसमें मेरी शक्ल मौजूद है और शक्ल के पसे-पुश्त बेशुमार ताक़त मौजूद है।

हज़रत क़िब्ला= मैंने तुमको छिपा कर अपने सीने में रखा और किसी को शुबह भी न होने दिया। सिर्फ **नन्हे** (रघुबर दयाल) को ज़रूर ख़्याल हुआ और था। चूंकि **नन्हे** मेरी हालत से वाबिस्ता थे, इसलिए उन्हे कुछ-कुछ शक था।

मुझे उनकी (**नन्हे**) की इज़्ज़त का ख़्याल था, इसलिए उनकी हैसियत बना दी। वो रईसाना ज़िंदगी बसर करने लगे। लालच बहुत बढ़ गया। खुदा को बिल्कुल भूल गये। यह तुम्हारा (मुराद रामचन्द्र) का ही ज़र्फ़ था कि सरमाया होते हुए तुम्हें मेरी याद नहीं भूली। ऐसे ज़र्फ़ के आदमी बहुत कम होते हैं।

नन्हे के यहां रुपया ऐशो-इशरत में बर्बाद किया गया। मुस्तहक़ीन महरूम रखे गये। ग़रीबों का कुछ भी लिहाज़ न था। मालदारों की क़द्र थी तुम्हारी बूआ रुपया लेने

में बड़ी उस्ताद हैं। अक्सर ग़रीब जो वाक़ई मुस्तहिक़ थे, रुपया न होने की वजह से महरूम गये हैं। तुम **(R.C.)** इन बातों का लिहाज़ रखना।

मैंने तुम्हारी 15 रोज़ (जब 15 दिन की रुख़सत लेकर मेरे पास रहे थे) में **तकमील** कर दी थी। (नोटः मैं ग़ालिबन जुलाई सन् 31 में रहा था।) तुमको मैंने इसीलिए बुलाया था। अगर ख़त के ज़रिए बुलाये जाते तो शोहरत हो जाती। **तुमने ग़लती की जो अपनी डायरियाँ नन्हे के पास भेजी**। अगर तुम्हे कोई ऐसा शख़्स मिल जाऐ तो बराहे-रास्त अपने से ताल्लुक़ रखना। **श्रीकिशन लाल** के लिए तुमने आज अच्छा काम किया। मेरी फ़िक्र दूर हो गई। **बिरजू को शुद्ध अहंकार ने ख़राब कर दिया। मुंशी तो निकम्मे निकले, मगर यह ज़िम्मेवारी उनके पीर पर है**। अब तुम सम्भालो। उनको (**बिरजू**) मेरा ख़्याल बहुत रहता है। **जो कुछ सीखना हो मुझसे सीख लो। फिर इस काम से मैं अलहदा हो जाऊंगा। मेरे बुढ़ापे का ख़्याल करो। तुमको मदद ज़रूर देता रहूंगा।**

जवाब-ब-सवाल फ़रमाया= कस्वी ताक़त में इतना ज़ोर नहीं होता जितना वहबी में होता है। वहबी में **Full** ताक़त दी जाती है।

नन्हे ने जो कुकर्म (यानी बुरे काम) किये वैसे तो रावण ने भी नहीं किए थे। रावण दुश्मन को होशियार करके मारता था। उन्होंने दोस्त बन कर तुम सब को नुक़सान पहुंचाया। अगर होशियार करके यानी Challenge (चैलेंज) करके खुल्लमखुल्ला नुक़सान पहुंचाते तो इतना नुक़सान न होता। मैं आनन-फ़ानन में इस नुक़सान को पूरा कर दूंगा।

तुमको बेजान चीज़ पर क़ाबू (Control) देता हूं। यह आज की तैयारी है। काम ख़त्म कर देना। मैं टटोल रहा हूं कि कौन सी चीज देने को बाक़ी रह गई। **एतकाद** जिसको सीखना है वो तुमसे सीखे। मेरी **दुआ** है कि जो तालिब तुम्हारी सोहबत में रहेगा उसका एतक़ाद पुख़्ता हो जायेगा।

हिदायातः-

1. तुम्हें अपनी जिंदगी ऐसी बनाना चाहिए जैसे मुरगाबी। जब वह पानी से

निकलती है तो खुश्क पर निकलती है।

2. बिरादाने सतसंग से मोहब्बत। रोज़मर्रा की बोलचाल में शीराँदहनी।

3. दोस्त दुश्मन एक जानो। (यानी दोनों की भलाई चाहो)। जोड़ा (यानी बीवी) अच्छा मिला है। फ़क़ीर की बीवी ऐसी ही तेज़ (तुंद) मिज़ाज होना चाहिए। तुम्हें क़ुतुब का दर्जा इसी की बदोलत मिला है।

सवाल राम- 'क्या खुशामद की जावे'?

जवाब- यह सभ्यता के ख़िलाफ़ है। यह बात तुम मुझसे सीखो, जैसा कि मैं बरतावा करता था।

सवाल राम "जब तक आप ताक़त न दें तब तक पैरवी कैसे की जा सकती है?"।

जवाब- "यह ताक़तें मैं सब दे चुका, वक़्त पर उभरेंगी।"

20.5.44

ख़िताब मदन मोहन लाल अज़ हज़रत क़िब्ला।

सवाल जो चीज़ हज़रत को सबसे प्यारी हो वो बख़्श दीजिए।"

जवाब- मैं दे चुका! मैं दे चुका!!

21.5.44

तुम अब रुख़सत सितम्बर से आगे न बढ़ाना बर्ना तुम्हारा नुक़सान होगा। अगर डॉक्टर कहे या तुम्हारी तंदरुस्ती इस लायक़ न हो तो दो माह की रुख़सत बढ़ा देना। उस हालत में, मैं तुम्हारे नुक़सान का ज़िम्मेवार हुंगा। तुम हमारे **महबूब** हो। तुम्हारी हर अदा मुझे पसंद है। तुम्हारा कहना मैं नहीं टाल सकता, न तुम्हारी कोई तकलीफ़ मैं देख सकता हूं। तुम्हारी तकलीफ़ात देखकर मुझे तकलीफ़ होती है। (इसके बाद मेहबूबियत की कैफ़ीयत तारी हुई यानी उसका इन्कशाफ़ हुआ)।

तुम अपनी रहनी-सहनी मेरे तरीक़े पर रखना। किसी से नाराज़गी के वक़्त तबियत पर ग्लान न आने देना बरना मुझको उसका तख़्ता तबाह करना होगा। (जब दुआ की कि यह अमल की पाबंदी कराना आप ही पर मुनहसिर है) तो फरमाया कि घबराओ नहीं। कोई हज़ारों गालियां दे उसको बरदाश्त करो। यानी अगर कोई गालियां बग़ैरह दे, तुम उसको दो। मारो, कूटो मगर दिल से उसकी बुराई न चाहो; अंदाज़े में तुम्हें इख़्तियार है। उसमें इसकी ज़रूरत नहीं। मगर किसी हद तक कन्ट्रोल (Control) रखो। नालिशात करो। मुक़द्दमा दायर करो। अगर मौक़ा पड़ जाये तो फौजदारी में भी कोई हर्ज नहीं। **हर हालत में मैं तुम्हारे साथ हूं।** मज़लूम को ज़ुल्म से बचाना फर्ज़ है। ज़रूरत पर अगर तलवार लेना पड़े तब भी कोई हर्ज नहीं।

तुम्हारे गिराने और बिरजू को बढ़ाने के लिए यह दुआ की गई थी। नुक़्तये निगाह तो यह था कि रामचन्द्र कहीं बिरजू से बढ़ न जाएँ, लेकिन दुआ के अलफ़ाज़ यह थे कि **रूहानी दौलत मेरे (नन्हे) घर ही में रहे और बिरजू रूहानियत में भरपूर हो जायें।**

22.5.44

इरशादः- दुनिया के हालात कुछ ऐसे ख़राब हो रहे हैं कि अपने को बेदाग़ बचाना बड़ा मुश्किल है। मौलवी **अब्दुल ग़नी खां साहब** को भी समझना पड़ेगा। **गर्मी और हिद्दत जो जिस्म में महसूस हो उसको फ़ौरन अलहदा फैंकते जाओ। अभी कोई will बाँधने की ज़रूरत नहीं। ज़रा तकलीफ़ उठा लो, अभी defensive रहो, अभी कोई will बाँधने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारी बड़ी ज़बरदस्त निगरानी की ज़रूरत पड़ गई। मुचैटा सख़्त हो गया। आप क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) से रुजूअ रहो। इस दौरान में तालीम देना बंद कर दो। क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) से मदद के तालिब हो। दिन का सोना बंद कर दो।**

क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) तशरीफ़ लाए और फ़रमायाः- "तुम घबराओ नहीं। अगर तुम कहो तो वहां का ख़ित्ता ही उल्ट दूं"। अर्ज़ किया, "जैसी मरज़ी हो"। फरमायाः- "देखा जाऐगा"। फिर कुछ अन्द्रूनी ताक़त बख़्शी।

दिमाग़ बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है। तुम्हारा दिमाग़ ही नहीं रहा जो

बिगड़ेगा। **कल** मैंने जो कहा था कि **होशियार** हो जाओ। ग़फ़लत में न रहो। उससे मेरा यही मंशा था जो आज वारदात हो रही है। **काम जो हो चुका उसको दुनिया में कोई उलटने वाला नहीं है।** मैं तुम्हारे पास से अब किसी वक़्त नहीं हटूंगा। इबारत का ख़्याल रखना। रात में खाना कम खाना और यह भी न हो कि भूखे रहो। **वो इस वक़्त वहीं हैं।** यह सब तुम्हारी बेहतरी की बातें हैं। जो इस कश्मकश में तुम **फ़ायदा** उठा गये वैसे ज़रा मुश्किल था। **मेरी उम्मीदें बर आईं, बड़े ख़ुशक़िस्मत हो। मैं अब तुम्हारे पास बैठे-बैठे सब काम करूंगा। तुमने मेरी वो ख़िदमत की जो अब तक कोई न कर सका। हर काम करने के लिए हाज़िर रहे। मेरे लिए चोरी और डकैती तक करने को जायज़ समझा।**

वो (मदन मोहन लाल) भी मुझसे ख़ूब चिपके हुए हैं और मुझे भी उनसे मोहब्बत है। उनको कुछ बातें छोड़ना पड़ेंगी। वक़्त पर बता दी जावेंगी। उनकी परवाज़गी **अहंकार** से ऊंची हो चुकी है। मुक़ामे **इब्द** खुल चुका है। इससे ऊपर तुम खोलोगे।

दरियाफ्त किया= कि यक़ीन कराने के लिए क्या यह हो सकता है कि उस मुक़ाम का (ख़्याल) उसके ख़्याल में डाल दे। और जब उसको यक़ीन हो जाए तो अपने ख़्याल को वापस कर ले।

जवाब इरशाद हुआ= ऐसा करना मत, वाक़्यात ने रुख़ बदल दिया है। मुमकिन है कि **मुंशी** तुम्हारे पास आवें, गो इसकी उम्मीद कम है। माफ़ न करना बल्कि टाल देना। वो **(नन्हे)** अब ठीक नहीं हो सकते। इन बातों पर ग़ौर पहले ही कर लिया है। रुपया उनका ख़ुदा है। मेरी और तुम्हारी बातों का जब वक़्त होता है उस वक़्त उनको (स्वामी जी) बचा जाओ तो अच्छा है। रात में लेटने में कोई हर्ज नहीं है। इब्द ऊँचा मक़ाम है। यह मराक़बा भाई साहब (मदन मोहन लाल) ने ब्रह्मा शांतानंद को ख़ूब बतलाया। अगर अमल किया तो बन जावेंगे। यह आदमी अच्छा निकलेगा, अगर सम्भल गया। तुम्हारे लिए यह आदमी कारामद होगा। उनके गुरु को तुमसे बड़ी मोहब्बत है। उनकी कृपा तुम्हारे शामिले हाल हैं। वो भी तुम को बहुत कुछ दे चुके हैं। और आगे भी इरादा है। अगर वह तुम्हें कुछ दें तो उसका एवज़ दे देना। उनसे मिलना। मौक़ा अगस्त ही में ठीक रहेगा। उधर तुमको बहुत से काम करना बाक़ी हैं। और उस वक़्त पर तुम्हारी हालत भी कुछ और होगी रामेशर से वाक़ई मुझको

तकलीफ़ पहुंची। वह माफ़ तब ही हो सकते हैं जब तुम करोगे। पंडित बाबूराम से उम्मीदें कम हैं। उनके साथ मेहनत रायगाँ होगी, उनको जग्गू ही के हवाले करो। तुम्हारे पास रुपये कभी नहीं घटेगा। 25 रुपया जग्गू को भेजो। खाने का सर्फ़ा बहुत बढ़ा हुवा है। बाग़ में तुम्हारी आमदनी इस क़दर होगी कि तुम ताज्जुब करोगे। दरख़्त भी बिक जावेंगे। बाग़ का काम मेरे नाम से शुरू करो। तुम्हारी Last resting place वहीं होगी। और मैं भी मौजूद रहा करूंगा। तुम्हारा आख़िर मेरी ही तरह होगा। तुमको उनको (मदन मोहन लाल) भी वहीं जगह देनी पड़ेगी। बहुत ख़ुश हो कर फ़रमायाः "ख़ुब निपटेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो।"

शाहजहाँपुर सेंटर होगा। यहीं से रोशनी सबको मिलेगी। कूएं की बुनियाद अपने हाथ से रखना। कल जा कर जगह मुन्तख़िब कर लेना। तुम्हारे बाग़ की रखवाली मैं करूंगा। बाग़ में एक कुआँ भी काफ़ी होगा; ज़रूरत समझो तो उधर वाला निकलवा लेना। वो अच्छी हालत में है। थोड़ा बहुत काम देगा। एक पत्थर का इन्तज़ाम रखना। मैं जो बताऊं वो उस पर कुन्दा करा देना। कुछ आम ग़रीबों को ज़रूर तक़सीम कर दिया करना। ख़सूसन बच्चों को। दिनेश बहुत ख़ुश होगा। उस पर मेरी ख़ास नज़र है। DMP के तह व बाला करने की मेरी नियत है। यह तुम्हारा ही जिगर था जो इस बदनामी को बरदाश्त कर गए। तुममें दोनों तरह की ताक़तें हैं। मुझे उनसे भी निपटना है। फूफाजी (मुंशी बिशन दयाल) को आप न बुलाना। ख़ुद आ जाएं तो दूसरा सवाल है। प्रकाश भी अच्छा निकलेगा। **मामला ठीक हो गया और अब मेरी फ़िक्र दूर हो गई। इसमें मुमकिन है कि एक-आध को और नुक़सान पहुंचे क्योंकि उन्होंने तकलीफ़ देने की नियत की है। तुम्हारी तकलीफ़ मैं नहीं देख सकता। खूब ज़ब्त से काम लिया।**

लोग तमाशा देखेंगें अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। तुमने इतनी छोटी सी उम्र पर वह बात हासिल की है जो बड़ो-बड़ों को नसीब नहीं।

अपने से ज़्यादा तुमको ज़ाहिर करूंगा। बाबू मदन मोहन लाल की सोहबत को ग़नीमत जानो। उनको चचा (मुंशी रघुबर दयाल) ने बहुत **धोखा दिया। चचा अपने किए को पा गये।** स्वामी जी के गुरु की इस वक़्त स्वामी जी को बढ़ाने की प्रेरणा हो रही है। उनको तुम्हारी हालत की ख़बर नहीं। इस वक़्त तुमको छेड़ना सख़्त ग़लती होगी। यही वजह थी कि तुम उनकी तरफ़ मुख़ातिब होना चाहते थे। तुम उस जज़्बे के

रोकने में वेक़ाबू थे। मैंने रोक दिया। फ़िलहाल सतसंग बंद कर दो। आज **क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने तुमको कुछ और ही बना दिया। (कैफ़ियत बढ़ रही है) मुझको इसकी भी निगरानी करना पड़ेगी। दुश्मनों की ताक़तें कमज़ोर पड़ गईं। अब वो तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकते** देखो **Dmp** का मुझे फिर ख़्याल आ गया। जहां तक हो सके घर में कम जाओ। औरतें नाक़िस-उल-अक़्ल हुआ करती हैं। उनके कहने-सुनने की परवाह मत करो। यह हालत बहुत दिनों नहीं रहेगी। इसके बाद सलूक आवेगा। **सबसे पहले तुमको इजाज़त मौलवी साहब क़िब्ला (रहम०) न दी थी**। शाम को ज़रा टहलने निकल जाया करो। यहां गपबाज़ी बहुत होती है। इन्कशाफ़ बाबत ख़्वाब मदन मोहन लाल; मोरख़ यकुम **नवम्बर सन** 34 **ई।**

इरशाद हुआ= यह बात बिलकुल साफ़ है। यह घर अक्सी सूरत में नज़र पड़े और वह घर असली सूरत में नज़र पड़े।

सवाल मदन मोहन "आप ही कर दीजिये"?

इरशाद हुआ, हो गये। **यह तकलीफ़ात सब जाती रहेंगी। अब वक़्त और है। बस मैं कह चुका।** तुम (R.C) भी धुर तक जा चुके हो। दो एक रोज़ दोपहर में आपको (मदन मोहन लाल को) यहां ही रोक लिया जावे। आदाबे-पीर का तुम्हें नक़्शा दिखलाया था, जिसको तुम्हें आगे लिखना पड़ेगा।

तुम्हारे वालिद का अंजाम बख़ैर हुआ। तुम्हारी उस रोज़ की तब्बजोह काम कर गई।

जो मुझे ख़्याल आता जाता है वह तुम्हें बताता जाता हूँ।

ज़िक्र यह था कि मौलवी साहब क़िब्ला (रहम०) हिम्मत का नमूना थे।

इरशाद हुआ= अब मैं अलहदा होता हूं। अब वो भी तुम्हें तालीम करेंगे। मैंने उन से वायदा ले लिया है। अब उन्हीं को सब कुछ समझो। वो भी तुम्हारी मदद करेंगे। मैं तुम्हारे **अंदर समाया** हुआ हूं। लिहाज़ा हर बात में उन्हीं से मुख़तिब हो। वो तुम से मोहब्बत रखते हैं। **तुम्हारी तालीम की सिफ़ारिश सबसे उन्हीं (हज़रत मौलवी साहब क़िब्ला) ने की थी। और यह मेरी ज़िंदगी में हुई थी। तुम्हारी तहरीक ख़लीफ़ा साहब (रहम०) से हो रही है। वो भी आ रहे हैं। सम्भल कर बैठो। आज तुम में कोई बात**

बाक़ी नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारी इजाज़त हज़रत मोहम्मद साहब (सल०) तक हो चुकी है। अब तुममें कोई कमी बाक़ी नहीं है। बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि बराबर लिखते रहें।

जनाव ख़लीफ़ा साहब (रहम०) तशरीफ़ लाये। **फ़रमाया:- "मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहब से कह दिया है। तुमको मैंने भरपूर कर दिया। गुरु महाराज का नाम तुमसे रोशन होगा। लोगों को हैरत होगी"** तशरीफ़ ले गये।

बाबू **दिलाराम** को लिख दो कि उन्हें कानपुर जाने की ज़रूरत नहीं। उनके साथ **मुंशी** ने यह गड़बड़ की। कमज़ोर दिल थे। **मुंशी** ने उनका दिल हिला दिया। सन्यासी को वुक़अत ज़रूर करना जैसा कि मेरा वतीरा था। **मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहब ने जो ताक़त मुंशी को दी थी, वो तुम्हारे पास आ गई।**

शाम को टहलने और गपबाज़ी से बचने का प्रोग्राम मन्सूख़।

सवाल मदन मोहन लाल- "**माताचरण** पर बड़ा ज़ुल्म किया गया। उन पर रहम कीजिए।"

इरशद हुआ, "वो **बख़्श** दिया गया।"

दुनिया नापैदाकनार है। जब यह नापैदाकनार है तो उक़्बा का कुछ आर-पार नहीं।"

सवाल= **तवज्जो** नए आदमी को कैसे दी जावे?

इरशाद= "अपनी धार को बारीक करके दिल पर नुक़्ता बना दो ताकि समुन्दर की पूरी लहर न पहुंच जावे। जितना उसको बढ़ाना हो, उतना ही उसको (धार को) मोटा करते जाओ।"

सवाल मदन मोहन लाल, "जब तक अहसास न हो, यह पता कैसे चले?"

इरशाद= "तजुर्बा सब सिखा लेता है। तुम्हारे लिए मैं अपना तजुर्बा सब दे चुका; सिर्फ खुलना बाक़ी है। मेरे पास सिर्फ़ तुम्हारे लिए दुआ रह गई है। वो हर वक़्त तुम्हारे शामिले हाल है। मैंने तुम्हारे देने को कुछ नहीं रखा।"

अब क़िब्ला मौलाना साहब अपना तजुर्बा अता फ़रमावेगें।

उनमें (मदन मोहन) निस्बत मेरी है। वो अपनी प्रकृति से धोखा खा रहे हैं। (हालत तारी करके दिखलाया कि सिर्फ़ इतना ताल्लुक़ है) **मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहब** ने ग़लत कहा, गहरी निस्बत मेरी ही है।

चचा (नन्हे) की निस्बत किसी में नहीं आई। बाबू **ब्रजमोहन लाल** ने तुम्हारी हालत से धोखा खाया। उन्हें यह पता न था कि कूज़े के समुन्द्र बंद किया गया है। **मुंशी** ने तुम्हें चुग़द समझ रखा था। **मगर यह लफ़्ज तुम कभीं अपने लिए न इस्तेमाल करना। जब ज़बान में असर है तो यह तीर तुम्हारे भी लग सकता है।**

अपने को **आजिज़** समझने में कोई हर्ज नहीं। फूफाजी को **(नन्हे को)** तुम्हारी खटक थी, वह ही कांटा बन गई।

आप मौलवी साहब क़िब्ला से रजूअ रहा करो जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं।

डॉक्टर श्रीकिशन लाल अब कुछ बन कर रहेंगे।

डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय की हालत अब उम्मीद अफ़ज़ा है। उनमें तुमने जान डाल दी।

श्याम बिहारी लाल पर मेहनत रायगाँ जायेगी। वह चचा के गुलाम हैं। उनको समझाना मुशकिल है। कोशिश किए जाओ इसमें कोई हर्ज नहीं।

बाबू **ब्रजमोहन लाल** के लिए अपनी भावज के कहने में न आ जाना। मैं समझता हूं, तुम दोनों में बहुत मोहब्बत है। उनको फ़ायदा पहुंचाने में कोई हर्ज नहीं। **ताक़तें देने में मेरी तरह ग़लती न करना। ताक़त सिर्फ़ एक ही में रहेगी। काम सब का** बन जावेगा।

कानपुर में तुम्हें सूखी रोटियां खिलाई जाती थीं और मुंशी मज़ा करते थे। और मुझे अफ़सोस होता था। तुम्हारे ज़ब्त ने मुझे बहुत तकलीफ़ पहुंचाई।

बाबू मनमोहन लाल (लखनऊ) को अब इजाज़त दे देना।

गुज़ारिश मदन मोहन, “बड़े मौलवी साहब से मेरा सलाम कह दीजिये।”

जवाब “मेरी दुआ कह देना। मैं कहीं गया नहीं।”

बाबू **मनमोहन लाल (लखनऊ)** को अभी इजाज़त देने से तुम खुल जाओगे, वक़्त

का इन्तजार करो।

ब-सवाल (R.C.) .....इरशाद हुआ कि "यह **नन्हे** (रघुबर दयाल साहब) की धोखाबाज़ी है। **इजाज़त सिर्फ एक** होती है, वह **मुकम्मिल** कहलाती है। **शर्तिया इजाज़त** और है। **यह नन्हे की मन घड़न्त** है। वक़्ते इजाज़त बाबू **मदन मोहन लाल को मुकम्मिल इजाज़त** दे चुका था।"

सिर्फ़ बिरजू को बढ़ाने के लिए यह बैअत का शगूफ़ा रचा गया।

क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि डॉक्टर चर्तुभुज सहाय से मैंने खुद बैअत कराई थी।

जब वह (**मदन मोहन**) मुझसे मुख़ातिब हुए थे कि "जब मैं इजाज़त दूंगा तब बैअत करूंगा।" मैंने (हज़रत क़िब्ला) उसका जवाब नहीं दिया बल्कि चाहता था कि यह तफ़ावत खुद-ब-खुद निकल जावे। आज कुल मामलात साफ़ कर लो। मैं एक सैकेंड को भी आज तुम्हारे पास से नहीं जाऊंगा। और आज इस क़दर खुश हूं कि तुम्हारे पास से जाने को तबियत भी नहीं चाहती। **सब बुजुर्गों की निगाहें अब तुम्हारी ही तरफ़ हो गई हैं। उधर से वास्ता क़तई छोड़ दिया गया है।** (Ravender) **(रविन्द्र)** (पिसर अव्वल मुन्शी) से तुम मोहब्बत रखना और बूआ से तुम्हारा ख़ूनी ताल्लुक़ है।

वो **(मदन मोहन लाल)** कुछ से कुछ हो गये। पहली हालत से मुकाबला कर लें। **लल्लन पर चचा (नन्हे) ने बड़ा ज़ुल्म किया। लल्लन की हालत अब वो नहीं रहेगी। मुंशी बड़े हज़रत हैं। रफ़्ता-रफ़्ता वो (लल्लन) ठीक होगा। तुमने** जल्दी कर दी।

रामेशर के **ख़ून** से जो तिलक किया गया है उसका मक़सद उनकी **गुलू तराशी** था। उसके धब्बे (Dots) अब तक बाक़ी हैं। **मैं निगरानी न करता तो ना मालूम क्या से क्या हो जाता। यह स्प्रिट Spirit तुम्हें नुक़सान पहुंचाने के लिए और बाबू मदन मोहन लाल को ज़क देने के लिए थी। जज़्बा यह भरा गया था कि रामेशर तुम्हारे ख़ून से अपने हाथ रंग ले। मगर मैंने यह बात पैदा होने नहीं दी। वह ख़ून तुम्हारे बदन में से खींच कर तिलक किया गया है ताकि जिसका ख़ून है उसी का यह शख़्स क़ातिल हो। इस काम के लिए उनको (रामेशर को) ज़्यादा मौज़ूँ समझा गया।**

जब तुम **कानपुर** रहे **मुंशी** का तुम्हें **ज़हर** दिलवाने का इरादा था। **मगर मैं यह ख़्याल उनका क़ायम होने नहीं देता था।** तुम मुझे किसी वक़्त नहीं भूलते थे इसलिए

मैं भी किसी वक़्त नहीं भूलता था। तुम्हारी नेकनियती और सादालोही की वजह से मुझे तुम्हारी और भी हिफ़ाज़त करना पड़ती थी। **इस Plot में तुम्हारी बुआ शरीक नहीं थीं।** इस वजह से मैंने उनको बचा दिया।

एक रोज़ तुम्हें कुछ खाने में दे भी दिया गया। मक़सद दिमाग़ बिगाड़ने का था। मैं सब हज़म कर गया। तुम्हें सिर्फ़ चक्कर और मित्ली महसूस हुई थीं। आलूओं में दवा थी। जिसने यह हरकत की थी वह अपनी सज़ा को पहुंच गया। (ज़हर देने वाले का नाम छोड़ दिया गया) उन्हें इस राज़ से वाक़फ़ियत थी। इस दवा के देने का एक मक़सद यह भी था कि तुम मेरा ख़्याल नहीं छोड़ते थे। लिहाज़ा इस दवा के ज़ोर से दिमाग़ पर असर डाला गया ताकि तुम्हारा ख़्याल मेरी तरफ़ से हट जावे और मैं (नन्हें) सलब कर लूं। मुंशी ने फूफाजी (नन्हे) से कहा था कि तुम सलब क्यों नहीं कर लेते। उन्होंने कहा था कि वह लालाजी का ख़्याल बांधे हुए हैं और वो उनको किसी वक़्त नहीं छोड़ते। इसलिए सलब नहीं किया जा सकता। इसलिए उनकी (मुंशी की) ज़ात शरीफ़ ने यह तदबीर सोची थी। वो दवा अज़ क़िस्म **धतूरा हो** सकती है।

24.5.44 वक़्त रात

मुंशी की बीबी से रसोईया महाराज का ताल्लुक़ है। इस वजह से उसको भी मुरिदे इताब ख़्याल करके अमल करो।

नोटः- काम करने से ज़रा पहले फ़रमायाः- अगर तुमने यह काम कर लिया तो वख़्श दिए जाओगे।

25.5.44

इनक्शाफ़ बाबत कश्फ़ पंडित रामेशर प्रसाद मोरख़ा 15 जनवरी सन् 43, वक़्त 8 बजे रात, जब मराक़बे की हालत में उन्होंने दो उंगलियां देखीं थीं (एक पर सूरज और एक पर आफ़ताब)।

इरशाद हुआः- उसका मंशा उन पर यह ज़ाहिर करना था कि बाबू राम चन्द्र और

मदन मोहन लाल दो हस्तियां हैं। **आज मैंने तुमको उसी हालत में ग़ोता दिया है। जो बड़े-बड़ों की होना मुश्किल है।** शिकार से दिल मज़बूत होता है। इसलिए मैंने तुम्हें इजाज़त दी है। **तुम्हारी कमज़ोरियां मैं एक नहीं रखूंगा।** आज काल चक्र का आवाहन करो। उसकी शक्ल सर्कल (Circle) की तरह स्याह होगी। आज काम बिल्कुल ख़त्म कर दो। सुर्दशन चक्र अपना काम कर चुका है। आज दिन में सो लेना।

नोटः- काम के वक़्त ख़्याल आया कि Volcanic erruption की हालत पैदा की जावे।

इरशाद हुआ– यह मत करना, वरना कुल ख़ित्ता उलट जावेगा। अब तुम मेंरी अंदरूनी हालत की नक़ल छोड़ दो। **अपने आप को सब कुछ समझो।**

वक़्ते शाम– तुम्हें इंगलैंड तबाह करना होगा। वहां के लिये कोई वली मुक़र्रर नहीं है। अपने भाई की हिफ़ाज़त कर लेना। अभी वक़्त दूर है। उनकी सब ताक़तें सलब करना पड़ेंगी। अपने भाई की हिफ़ाज़त तुम्हें करना पड़ेगी। निगरानी तुम्हें यहां के काम की भी करना पड़ेगी। अच्छे आदमियों की हिफ़ाज़त तुम्हारा फ़र्ज़ होगा।

बुलन्दशहर वाली को **शगले राब्ता और पतिमाब मोहब्बत** बतलाई गई थी। वो (H.C) सही व सालिम लौटेंगे। तुम चाहो तो उनकी तबियत आने के लिए उखेड़ सकते हो। लेकिन बुलाना मसलेहत नहीं। उसे तुम से बहुत मोहब्बत है। **निस्बत पीर ही से हुवा करती है इसमें पीर मुर्शद भी हो सकता है।**

सवाल (R.C.)= "क्या पीर से पहले बाले जो बुज़ुर्ग हैं उनकी निस्बतें भी आती हैं?"

इरशाद हुआ= पीर में सब निस्बतें शामिल होती हैं।

26.5.44

जब तुम मौजूदा काम ख़त्म कर लो तो इस हालत से हट जाना और अपनी पिछली हालत पर आ जाना। वही असली हालत है। अबूर दोनों पर रखो।

हस्बुल हुक़्म **मौलाना साहब क़िब्ला** (रहम०) आज तुम को ताक़त दी गई। उनकी

ख़ास निगाह तुम पर हो गई है। तुमने अपनी सादा लोही से सबको जीत लिया।

27.5.44

जो काम किया जा रहा था उसकी मुमानियत इसलिए की गई कि तुमने तेज़ी बढ़ा दी थी। मैं इस क़दर तेज़ी नहीं चाहता था। यह तुम्हारे **दिमाग़** की तारीफ़ थी कि मेहनत बचा ली और शिद्दत ज़्यादा कर दी। अब इस वक़्त इस काम को मत करो। बल्कि बिरादराने सतसंग की तरफ़ रूजूअ हो। चूंकि दिल में सख़्ती थी और ख़्याल उस तरफ़ राग़िब था इसलिए हुकम हुआ "उस तरफ कुछ रोक कर दो ताकि ख़्याल न जाये।" (वो कर दी गई)। "और काम तालीमी शुरू कर दिया। चूंकि सख़्ती बाक़ी थी इसलिए कहा कि "कोई काम करो और सो जाओ।" सो गया (पिछली रात को एक बजे के वक़्त कोई शख़्स दाहिने कंधे के क़रीब तकिए के पास आ कर बैठा और फ़ौरन हड़बड़ा कर उठा और भागा। ख़ौफ़ मालूम हुआ। मैंने कलमा हसब हिदायत पढ़ा।)

इरशाद हुआ= कि "यह सिफ़ली था। इसके भेजने वाले के सब असरात खेंच लो और जो शख़्स आया है उसको पकड़ कर दे मारो। (दे मारा।) अब मामले में तेज़ी फ़ौरन शुरू कर दो। (फ़ौरन कर दी गई)।

सुबह को इरशाद हुआ कि यह तुम्हारी बुआ का नादानिस्ता फ़ेल था।

मुतालिक़ा डॉक्टर श्री किशन लाल "तालीमी काम से कुछ ख़्याल थोड़े अरसे को हटा लें। तालीम का Mania छोड़ दें। उस कुब्वत को गुरु महाराज की तरफ़ लगा दें। दर्शन न होना यह मसलहत है।

जो बात तुमसे (R.C.) कही या सुनी जाये उस पर ग़ौर किया करो। ऐसा करने से दिल मोस्सिर न होगा। Extreme की आदत छोड़ दो Moderation (मोडरेशन) पर आ जाओ।

इसी दौरान में मदन मोहन लाल ने कहा कि "अगर मुझको ख़ास ताक़तें मिलतीं तो मैं ख़ूब जल्दी काम करता।"

इरशाद हुआ "इसी वजह से नहीं दी गई। इसके वास्ते **ठंडे दिल** का आदमी चाहिये।"

29.5.44

तुम उनके (R.P.) बारे-एहसान हो इसलिए उस काम को ठीक नहीं कर सके। उन्होंने (मदन मोहन लाल) ठीक किया। मदद ले लिया करो।

'ला' कह के तुम्हारा सिर उड़ाया गया।

30.5.44

ऑर्गनाईजेशन (Organisation) शुरू करो। लोगों को अपनी तरफ **खींचना** शुरू करो। नुक़्ताये ख़्याल एक **क़ायम** कर दो। **इख़लाक़** के सम्भालने की कोशिश करो। मैं इंतजाम कर चुका। ईथर (Ether) की ताक़त उधर मत फैंकना। वह बहुत तबाहकुन ताक़त है। इस ताक़त का किसी को अनुभव कराने की ज़रूरत नहीं। यह वह ताक़त थी जो अर्जुन में मौजूद थी जिसका जवाब नहीं था। ब्रह्मअस्त्र वो था जो मुख़ालफ़ेन पर छोड़ा था।

काल चक्र शिवजी का ख़ास औज़ार है गाँडीब-धनुष में ख़्याली ज़र्रात मुंजमिद कर दिए गये थे। इन सबका Defence यह है.....। वशिष्ठ जी का ब्रह्म दंड ख़्याली ताक़त से Hypnotize (हिप्नोटाईज़) कर दिया गया था। बाण (तीर) भी हिप्नोटाईज़ कर दिए जाते हैं।

नन्हे को मैंने ताक़त दी थी, मगर पूरी नहीं दी थी। उन्होंने उसकी मज़ावलत खूब कर लीं। उन ताक़तों में अपने आपको लय (Merge) करना शुरू कर दिया था। ताक़त ही ताक़त रह गई असलियत गायब हो गई।

यह गुर की बातें हैं जो ख़ास एक ही शख़्स को बताई जाती हैं। अगर कोई शख़्स ऐसा मिल जाये जो हथियारों को ज़ात के हुक्म से काटे, तो उसमें अपनी हालत को ऐसा लय कर दे कि सिफ़र हो जाए। वो हालत यह है कि जहां ज़ात का भी ख़्याल नहीं रहता। महज़ वहम रह जाता है। और उससे आगे जा कर वो भी नहीं रहता। जिसने अपने आपको इसमें लय कर दिया है उस पर कोई बात असर नहीं करेगी। इस हालत

को पहुंचे हुए को कोई एक आध मिलेंगे। यह बहुत गूढ़ बातें हैं। इन बातों का सिवाय मेरे कोई सिखाने वाला नहीं। तुम्हारी गुत्थियां सुलझती रहेंगी। (कैफ़ीयत अनुभव हुई) **ज़ात** के आगे एक वहम और उसके बाद वहम भी नहीं। **हालत जो तुमको दिखलाई गई उसमें लय हो जाना सतगुरु की हालत की इब्तदा है।** इसके आगे **बक़ा** की हालत है। वो भी तुमको दें दी गई। इसके बाद बेशुमार बातें और भी हैं। तुम्हारा क़दम इसके आगे बढ़ रहा है। (यानी बक़ा के आगे) इसके आगे फिर रोशनी डालूंगा।

30.5.1944 मज़कूर

मुत्तालिक़ा मदन मोहन लाल– रात गुज़िशता में जो ख़ौफ मालूम हुआ था वो ख़ुदातरसी की हालत, जो पहले से मौजूद थी अब खुल रही है। जो-जो हालतें अब तक मजमली तौर से तुम पर गुज़र चुकी हैं वो अब मुफ़स्सिल तौर पर खुल जावेंगी। ख़यालात जिनकी तुम शिकायत करते हो उनको अब उभरने दो और जाने दो, ताकि जो हालतें तुममें दबी हुई हैं उनको फैलने को वुसअत मिले।

31.5.1944

सबकी सफ़ाई की ज़रूरत है। जितने अश्खास ने मुझसे तालीम हासिल की, उन सब में कसाफ़त भर कर ख़राब किया गया है।

कुंवर **राम सिंह** अब ठीक चल निकले।

बाबू मन मोहन लाल (लखनऊ) का ज़रा और ख़्याल करने की ज़रूरत है। **ब्रजमोहन लाल** की सफ़ाई करो। अभी तुमने सफाई नहीं की। अभी बहुत कसर बाक़ी है। सफ़ाई एक दम से करने में कोई हर्ज नहीं। सफ़ाई करने में वो औज़ार इस्तेमाल कर सकते हो, तब्ज्जो देने में नहीं। उसमें बहुत एहतियात की ज़रूरत है।

1.6.44

कानपुर के जो असरात तुम पर फैंके जाते थे, मैं अकसर ख़्वाब में साफ़ कर दिया करता था। मगर जब भरमार होने लगी तो मैंने तुम्हारे पास रहना शुरू कर दिया था। **रामेशर** को तुम्हारा क़ातिल बनाना चाहा था।

3.6.44

Organisation (ऑर्गनाईजेशन) के मुत्तालिक़ फ़रमाया कि **रामसिंह** को शर्तिया इजाज़त देकर वहां (जयपुर) का सतसंग उनके सुपुर्द किया जावे।

मन मोहन लाल (लखनऊ) को ज़रा और ठीक करके इजाज़त देना पड़ेगी।

हर शहर में एक न एक बना कर सतसंग उसके सुपुर्द कर दिया जाऐगा। और उन पर निगरानी तुम्हारी रहेगी।

करुणाशंकर अब ठीक हो चुके हैं। मगर जो दिया है उसको हज़म करा दो।

पंडित बाबूराम बेकार आदमी है।

4.6.44

ब्रह्माशांतानंद (यानी ग़ैर सिलसिले के सन्यासी) के वास्ते हुक्म हुआ कि उन से क़ता ताल्लुक़ करना ही अच्छा है। घर पर आयें और बातें करें और चले जावें। रूहानियत से वो तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते। मगर फ़ितरती बहुत हैं और तुम सीधे आदमी। उनसे कुछ कहने सुनने की ज़रूरत नहीं है। अगर वो तुम्हारे साथ फ़ितरत से पेश आये तो मुझको उसमें भी तुम्हारा साथ देना पड़ेगा। लिहाज़ा ऐसी नोबत क्यों आने दो। प्रकाश को उनके घर जाने को मना कर दो। इत्तफ़ाक़ से जाना पड़ जाये तो हर्ज नहीं। मेरा ख़्याल प्रकाश के मामले से बदल गया। ये उनकी बहुत नाज़ेबा हरकत और मोहसन कशी थीं।

सवालः- दरियाफ़्त किया कि उनका ख़्याल प्रकाश का डिविज़न गिराने में तो कामयाब हो गया।

इरशादः- मैं संभाल ले गया, गो थोड़ा नुक़सान तो ज़रूर हुआ।

अज़ीज़ जगमोहन के बारे में ख़्याल करने को दरयाफ़्त किया।

इरशादः- फ़रमाया कि उसको अपना भाई समझो।

सवालः- "अर्ज़ किया कि हजूर ने उनकी तालीम ज़ेर चंद शरायत बमूजिब वसियतनामा बिरजू के सुपर्द की थी?"

इरशादः- फ़रमाया कि वसीयत नातमाम रखी गई, क्योंकि लिखते-लिखते मुझको ये ख़्याल आ गया था कि वसीयत अगर मुकम्मिल की जाती तो तुम्हारा नाम आ जाता जो उस वक़्त के वाक़यात के मुताबिक़ क़रीने मसलहत न था। **बाबू ब्रजमोहन लाल** के सम्भलने में बहुत देर लगेगी। **बाबू ब्रजमोहन लाल** की कैफ़ीयत उस वक़्त अच्छी थी। और मसलहत भी थी कि **जग्गू** की तालीम उन के सुपुर्द की जाये, गो दिल तुम्हारे लिए चाहता था। मगर मजबूर था।"

सवालः- दरियाफ़्त किया कि बाबू मदन मोहन लाल की तबियत मुज़महल क्यों हो जाती है जिससे मुझे तकलीफ़ होती है?

जवाबः- फ़रमाया कि खुश्की बढ़ी हुई है, दूध फ़ायदा करेगा।

सवालः- फिर दरियाफ़्त किया कि मौजूदा सूरत में वो घी और दूध नहीं खा सकते हैं?

फिर फ़रमाया तुम अपने ख़्याल से भी दूर कर सकते हो।

वक़्त बाद 6 बजे शाम

मेरी जान निकल रही थी और बिरजू अपनी तगापो में लगे हुए थे। उनको अपनी सज्जादानशीनी का ख़्याल था। जाँकुनी के वक़्त भी लोगों की ग़रज़ें नहीं छुंटी अगर रुपया छोड़ा होता तो जाने क्या हाल होता।

सवालः- उन लोगों ने जग्गू की तरफ कुछ इल्तफ़ात नहीं की?

इरशाद हुआः- यही मस्ल हुई, दमी यार किसके; दम लगाया और खिसके। इन

लोगों को मुझसे बेग़रज़ मोहब्बत नहीं थी। नन्हे के ख़्यालात मेरे वसाल से कुछ पेश्तर अपना सिक्का जमाने के हो चुके थे। उनको मालूम था कि मैं नहीं रहूंगा।

सवाल मदन मोहनः- चचा ने कहा था कि पहले मैं जाऊंगा?

जवाब इरशाद हुवा, यह तुमको धोखा दिया गया। बाबू ब्रजमोहन लाल अपने आपको मेरी जगह का वारिस समझ चुके थे।

सवाल मदन मोहल लालः- क्या आपको उन्होंने तवज्जो दी थी?

जवाब इरशाद हुआ, मुझे तवज्जह ज़रूर दी थी, मगर मेरी आत्मा को अपनी आत्मा में मिला कर ख़्याल किया गया था ताकि रूह की परवाज़गी के वक़्त मेरी ताक़त उनकी रूह में absorb हो जाये।

मुझे ऐसे वक़्त में भी बहुत तकलीफ़ दी गई।"

बाबू ब्रजमोहन लाल में कसाफ़त की वजह यही है।

हालत का नक़्शा सामने आ गया। (वो यह था कि एक बुज़ुर्ग की रूह आलमे बाला की तरफ परवाज़ कर रही हैं और **ब्रजमोहन लाल** की तवज्जो पर उनकी **असली हीर** (जौहर) उन बुज़ुर्ग के साथ खिंच गई)।

यह सब तकलीफ़ तुम्हारी ही वजह से हुई। मैं मय उस ताक़त के निकला और निकलते ही पहले तुम पर (Power Transfer पावर ट्रांसफर की और फिर मैं चला गया। उनका (बिरजू का) हीर उस ताक़त के साथ ही खिंच गया। जो अब तक वापिस नहीं हुआ। ये फ़ेल मेरा नहीं था बल्कि automatically हो गया।

नक़्शा यह सामने आया कि सूरज पर किसी ने चिराग़ की रोशनी का अक्स यानी फ़ोकस (focus) डाल कर चाहा कि उसको (यानी सूरज को) अपनी तरफ ख़ींच ले। लेकिन सूरज ने चिराग़ की रोशनी को खुद जज़्ब कर लिया और वह चिराग़ की रोशनी भी अपने साथ ले गया।

मैंने **नन्हे** को अपनी ज़िंदगी इसलिए **दी थी** कि यह तुम्हारे लिए **सज़ा** थी। **मैं चाहता था और लोग मेरे पास नहीं आते थे।** पस मैंने मुनासिब समझा कि जिसके तुम **गखीदा** हो और जिसको तुम **ज़्यादा चाहते हो** उसी को मैं **ज़्यादा क़ायम** रखूं।"

नक़्शा आते मेरे पास थे और रूझान **नन्हे** की तरफ़ होता था। तो यह दिखलाया कि जिस बात को तुम लोग ज़्यादा चाहते थे उसी को मैंने क़ायम रखा ताकि तुम सब उसका मज़ा **चख लो। जग्गू** की हालत इन सब बातों से पाक और मुबर्रा है।"

5.6.1944

सवाल (R.C.)= दर्द की बहुत तकलीफ़ है। अगर ईश्वर की मर्ज़ी ऐसी ही है तब तो मुझे कुछ कहना नहीं। मैं उसी में राज़ी हूं और अगर मर्ज़ है तो बहुत तकलीफ़ दे रहा है?

जवाब इरशाद फ़रमायाः- **यह मर्ज़ नहीं है। बस इतने ही संस्कार तुम्हें भोगने को रह गये हैं। मुझे भी तो दर्द ही की तकलीफ़ थी। मैंने आख़िर में भोगे थे, तुम शुरू में भोग लो।** दवा खाते रहो।

मदनमोहन लाल के आराम का वक़्त आ रहा है।

तुम्हारे दर्द की ज़्यादती कुछ नन्हे की भी मेहरबानी है।

ख़्याल पैदा हुआ कि लालाजी साहब क़िब्ला अब चले गये।

इरशाद फ़रमाया= मैं तुम्हारे पास से किसी वक़्त नहीं जाता। मैंने तुम्हारा जिस्म अपना घर बना लिया है। सिर्फ़ मेरा ख़्याल जाता है। मेरी मौजूदगी तुम हर वक़्त अपने आप में समझो। **मैं खुद फ़ना हूं,** बैठे-बैठे तुम्हें खोलता रहता हूं। मैं किसी वक़्त ग़ाफ़िल नहीं हूं। रात के वक़्त तुम्हें आराम देता हूं और निगरानी करता हूं।

सवाल मदन मोहन लालः- क्या कानपुर की जानिब से खटका है जो आप निगरानी करते हैं?

जवाब इरशाद फ़रमायाः- कानपुर का मुझे कुछ ख़टका नहीं। वो तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते। मैं तुम्हारा निगराँ हूं। और भाईयों के निगरान तुम (R.C.) हो।

उनकी **(नन्हे)** ताक़त ख़त्म हो चुकी है। **तुम्हारा जिस्म मेरा जिस्म है।** तुम्हारे जिस्म में बैठे-बैठे काम करता हूं।"

जिस्म का मुक़ाबला जिस्म अच्छा कर सकता है। देहधारी की ज़रूरत है। बुज़ुर्ग इसी तरीक़े से अवतार लेते हैं और अवतार ख़ुद जिस्म में ज़ाहिर होते हैं।

तुममें मैं अपनी जुमला ताक़तों से फ़ना हुआ हूं और उनको खोलता जाता हूं। तुम्हारी हालत की अभी तक किसी को खबर नहीं हुई। आज तुम्हें तकलीफ़ बहुत है तो मैंने भी सब काम छोड़ दिए हैं।

मदन मोहन लालः- अब हज़रत क़िब्ला को आराम करने दो?

फ़ौरन फ़रमाया मुझे आराम जब मिलेगा जब तुम (R.C.) आराम दोगे। जब ज़्यादा तकलीफ़ हुआ करे तो तुम मेरी तरह से गाने लगा करो। उसमें खिंचाव हो जाता है और तकलीफ़ का ख़्याल कम हो जाता है। (तुम्हारे) गाने में असर पैदा हो गया। **मैंने एक चीज़ तुम्हें बड़ी बढ़िया दी है मगर अभी बताई नहीं जायेगी।**

6.6.1944

इरशाद हुआः- रामेशर का जो ख़्याल है कि जिसकी तवज्जो न लेना हो उसके और अपने दरमियान में दीवार (ख़्याली) हायल कर ली जावे, ग़लत है। क्योंकि जब तवज्जो दीवार पार दी जा सकती है तो क्या ख़्याली दीवार के पार नहीं जा सकती। अगर किसी को लोहे की कोठरी में बन्द करके तवज्जो दी जावे तो क्या असर नहीं होगा। ज़रूर होता है। तो भला ख़्याली दीवार क्या ताक़त रखती है। इससे यही बेहतर है कि उस शख़्स से जिससे तवज्जो न लेना हो, उससे न मिले। अलबत्ता अगर तुम ख़ुद तवज्जो दे रहे हो और चाहते हो कि फ़लाँ शख़्स को तवज्जो न पहुंचे तो ख़्याली दीवार क़ायम कर लेने से उसको तवज्जो नहीं असर करेगी।

दूसरों का क्या कहना। जग्गू ही तुमको (R.C.) जल्दी मानने के लिए तैयार नहीं होंगे। तुम्हें कहीं सतसंग में जाने की ज़रूरत नहीं है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर औरों की तवज्जो के ज़र्रात दाख़िल हों। अगर ऐसा मौक़ा पड़ जाए तो ख़ुद तवज्जो दो। शेर बनो।

अगर कोई न माने या ज़रूरत हो तो उसको चैलेंज (challenge) दे सकते हो। प्रकाश को खुद बैअत कर लेना।

जहां तक हो सके अबके **डॉक्टर चर्तुभुज सहाय** भंडारा (फ़तेहगढ़) में ज़रूर शरीक हों। **डॉक्टर चर्तुभुज सहाय** को दोबारा **इजाज़त** दे देना। अपनी तरफ़ से। **वो** मुराद मेरी तरफ़ से होगी। इस मामले में उनकी will कमज़ोर है। इस से उन में ज़ोर पैदा हो जायेगा।

सवाल R.C.= डॉक्टर सहाब को अगर मैं इजाज़त दूंगा तो निस्बत आप की तरफ से होगी, यह बात समझ में नहीं आई।

जबाव इरशाद फरमाया= **अपनी तरफ़ से कोई बात न समझो। तुम जो कुछ कहोगे वो मेरी ही इजाज़त होगी।**

डॉक्टर श्रीकिशन को भी इजाज़त देना पड़ेगी। मगर अभी यह बात **दूर** है। **श्यामबिहारी लाल बड़ा निकम्मा है। उनका ख़्याल चचा में डटा हुआ है।**

मदन मोहन लाल= वो ख़ूब हैं।

बाबू कृष्ण सहाय वकील कानपुर= उनकी जज़बाती कैफ़ियत अब भी है, मगर ख़्याल का रूख़ दूसरी तरफ़ है। वो ऐसे ही **रहेंगे**।

सवाल मदन मोहन= चचा कहते हैं, जो नास्तिक है वही सच्चा आस्तिक है?

जवाब इरशाद हुआ= ऐसा शख़्स महफ़िल के लायक़ नहीं। उससे परहेज़ करो।

जग्गू एक ग़रीब मिज़ाज आदमी है। उनके दिल को दुखाना नहीं चाहिए।

बाबू मन मोहन लाल (लखनऊ) खूब निकलेंगे, बशर्तेकि **तुम पर ईमान** लाऐं। तुम्हारी तवज्जो की ज़रूरत है।

उनके (**नन्हे**) जो मुरीद हैं उनको **तजदीदे बैअत** करना होगी। तुम्हें कुछ **ज़ोर** देने की ज़रूरत नहीं है, वो चाहें तो ऐसा कर सकते हैं।

तुम बैअत करने से क्यों घबराते हो। जिम्मेदार तो मैं हूं।

दरियाफ़्त किया= कि इजाज़त के वक़्त सिर्फ़ इजाज़त है कह दिया जाता है **या** तवज्जो दी जाती है?

इरशाद फ़रमाया= **कि तवज्जोह भी दी जाती है, और उसका इन्कशाफ़ तुम पर हो चुका है। हालत भर दी जाती है। जो तरीक़ा तुम्हारे साथ किया गया, वो नहीं किया जाता। वो सिर्फ़ एक ही पर होता है। बन्दिशें हरगिज़ मत तोड़ना।**

अर्ज़ किया (R.C. ने):- मुझसे इतनी ही बात सरज़द हो जितनी आप फ़रमा चुके हैं।

जवाब इरशाद हुआ= **इसका मैं ख़्याल रखूंगा।**

सवाल मदन मोहन लाल= आपने एक (R.C.) को खूब दिया?

जवाब इरशाद हुआ= **पात्र के मुताबिक़ कमी मैंने किसी में नहीं रखी। जैसा पात्र था वैसा दिया। बन्दिशें टूटने में कभी विशेष फ़ायदा नहीं होता। ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। उसको 24 घंटे में किसी वक़्त फ़ुरसत नहीं मिलती। मैं अपने बेटे के लिए भी कोई जगह मुर्क़रर करूं या न करूं।**

तुम्हारे (R.C.) विसाल के बाद मैं आज़ाद हो जाऊंगा और सब ज़िम्मेदारी तुम पर आ जावेगी। यह सिलसिला बराबर चलता रहेगा। क़ुदरत एक को अपना औज़ार (Instrument) बना लेती है।

डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय अपने लड़कों को बैअत खुद करें।

शबे गुज़िश्ता में दरियाफ़्त करने पर **कि जब पीर का ज़र्रा-ज़र्रा ज़ात में फ़ना हो कर ज़ात हो गया तो क्या उसका तसव्वुर आख़िर दम तक करना चाहिए?**

इरशाद हुआ= **मैंने ऐसा ही किया है।**

(खुदा का तसव्वुर बिला आकार क़ायम कभी नहीं हो सकता।)

7.6.44

इरशाद हुआ कि तुम्हारा (मदन मोहन लाल) सिर्रः का लतीफ़ा ज़ोरदार है और चमत्कार लतीफ़ा क़ल्ब में ज़्यादा है।

8.6.1944

अपनी हालत को वक़्ते तवज्जो दुसरे पर नहीं फैंकना चाहिये। सिर्फ़ साया ख़्फ़ीफ़ सा फैंक सकते हो। मगर हर शख़्स पर नहीं। यह एहतियात सिर्फ़ तुम्हारे लिए है।

तुम्हारी सज्जादा नशीनी का बाबू ब्रजमोहन लाल को बहुत शॉक (Shock) होगा। और उनकी तबियत मुद्दतों में दुरूस्त होगी। बुआ (वालदा बिरजू) को भी रंज होगा। वो अपने भाई (नेमचन्द) को भड़कायेंगी और उनके भाई की यक-गोना दुश्मनी तुमसे बढ़ जायेगी। वो पहले भी तुम्हारा कुछ नहीं कर सके तो अब क्या कर सकेंगे। उन सब (कानपुर वालों) की हालत बहुत ख़राब होगी। बाबू ब्रजमोहन लाल की तरफ़ कुछ लोगों का रूझान रहेगा। उन्होंने अपना सिक्का ख़ूब जमा लिया है। तुम्हें **Defence** (डिफ़ेन्स) की ज़रूरत नहीं। तुम्हारे ऊपर किसी की ताक़त काम नहीं करेगी। हालाँकि सब ताक़तें तुम्हारी तरफ़ Locate हो जावेंगीं; और सब सतसंगी छोड़ दिए जावेंगे। और **ब्रजमोहन लाल** तुमसे दुश्मनी रखेंगे।

सवाल= मदन मोहन लाल के भी खिलाफ़ हो जायेंगे?

जवाब= उनसे लोग डरते हैं। तुम्हें उनके (बाबू ब्रजमोहन लाल) यहां भी जाना छोड़ना पड़ेगा।"

रामेशर तुम्हें मुशकिल से क़बूल करेंगे। उनसे तुम्हें होशियारी की ज़रूरत नहीं।"

वक़्त 8.30 बजे शब।

हरिशचन्द्र फ्रांस पहुंच गये। मैंने (R.C.) ने ख़ैरियत पूछी तो फ़रमाया= अभी जाता हूं। 5 सैकेंड के बाद जबाव मिला, कि ख़ैरियत से हैं।

सवाल (R.C.)= मैंने उनकी हिफ़ाज़त हजूरे अक़दस के सुपुर्द की; मुझको उनसे बहुत मोहब्बत है।

इरशाद फ़रमाया= इत्मिनान रखो; मैंने यह duty अपने सुपुर्द कर ली है। वह ख़ैरियत से वापस आवेंगे। इस लड़ाई से तुम्हें In touch रहना चाहिए। खबरें मिलती रहेंगी। B को तबाह करना है। नतीजा फ्रांस की लड़ाई का बरतानिया के ख़िलाफ़ होगा। यह काम तुम्हारे ही ज़िम्मे किया गया है। (काम शुरू हो गया)। इस काम के लिए

किसी दूसरे को depute मत करना। कुछ क़ुतुब तुम्हारे नीचे भी काम कर रहे हैं। यह बड़ा काम है। इस काम के लिए तुम्हीं मौज़ूँ हो।

सवाल= कौन-कौन क़ुतुब काम कर रहे हैं?

जवाब= इन्कशाफ़ हो जाएगा; मैं वहीं (F) जा रहा हूं। तुम्हारे और मेरे दोनों के यह सुपुर्द हुवा है। फ्रांस में तुम भी मेरे साथ रहो। तालीम का काम तुम्हारे ही सुपुर्द रहेगा। यह मुन्तक़िल नहीं कर सकते। (एहसास हुआ) तुमसे बड़े-बड़े लोग फ़ैज़ पावेंगे। (यूरोपियन कोन्टीनेंट) मग़रबी मुमालिक के तुम्हीं मालिक हो। अपना जिस्में लतीफ़ अब कानपुर से हटा लो। **मुझ में और तुम में अब सिरमू फ़र्क़ नहीं।"**

9.6.44 वक़्त 8 बज कर 40 मिनट

अब धुआँधार लड़ाई फ्रांस में शुरू हो गई। तुम काली की ताक़त बढ़ाते जाओ। काली में महाकाली मौजूद हैं। आज ये लोग इस जगह का मोर्चा छोड़ दें।

10.6.44

तुम एहसास की ताक़त घुटल कर रहे हो। तुम हर बात मुझसे पूछना चाहते हो। दूई किसी हद तक मौजूद है। वो इसी तरीक़े की, जैसे गन्दे पाख़ाने से वापस आकर किसी अच्छी जगह बैठा दिया जाए तब भी उसका ग्लान कुछ अरसे तक रहेगा। वाक़ई तौर पर वो पाख़ाने में नहीं है। मगर वो हवा उसके दिमाग़ में गूंज रही है। यह बात तालीम से दूर हो जावेगी।

जिसको **बैअत** करे उसकी परनाली अपने दिल से मिला ले। मैं यही करता हूं। धुएँ वाली तरकीब की ज़रूरत नहीं।"

ऐं ऐं करने की ज़रूरत नहीं। वक़्त बचाओ।

11.6.1944

सवाल (R.C.): जब नज़र करता हूं तो सब मक़ामात खुले हुए मालूम होते हैं।

पर नहीं मालूम कि हालत क्यों बदलती रहती है?

इरशाद हुआ= कि **यह भी एक क़िस्म की हैरत है।**

12.6.44

किताबों का छपना बन्द कर दिया जावे; इससे Propaganda हो रहा है जो तुम्हारे खिलाफ़ है।

16.6.44

जब किसी का नुक़्स दूर किया जावे या कोई कैफ़ियत पैदा करना हो। उसको करने से पहले बतलाया नहीं जाता। पहले से आगाह करके करने से उसका मन मुख़ालफ़त करेगा, क्योंकि मन उस नुक़्स या हालत का आदी है।

17.6.44

ख़ुदा से Direct मोहब्बत की मिसाल हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) हैं। मगर काफ़ी रूहानियत में तरक़्क़ी के बाद हुई थी और ज़रिए की मिसाल मैं खुद हूं।

मुसलमानों को बराहे-रास्त ख़ुदा से मोहब्बत होती है क्योंकि उनमें वहदत परस्ती ज़्यादा है। और हिन्दु हमेशा एक दूसरे के आधार पर रहने की वजह से उनमें आधार लेने की ख़ब्त रगो-रेशा में समा गई है; इसलिए उनको ज़रिए ही से फ़ायदा होता है। तुम जैसा शख़्स देखना, वैसा ही तरीक़ा बताना।

22.6.44 वक़्ते शब

इरशादते पीर= तुम्हारी हालत **कुतुब-उल अक़ताब** की है। यह डिग्री कोई मामूली डिग्री नहीं है। बहुत से कुतुब तुम्हारी मातहती में काम कर रहे हैं। उनको अहकाम तुम्हीं से पहुंचेंगे। जो बड़े काम इन लोगों के करने के नहीं हैं, वह तुम किया करोगे। तुम अपने आप का कुतुब-उल अक़ताब का तसव्वुर बांधो।

23.6.44

जो **मिस्कीनपन** तुम ने लिया है वो इससे (कुतुब-उल अक़ताब से) अगला मक़ाम है। ये मिस्कीनी पन पैदा करने में **हिम्मत** में कमी पड़ जायेगी। पहुंचना इसी हालत पर है। मेरे यहां भी तुमसे अच्छा **कश्फ़** किसी का नहीं है। बाबत हिम्मत फ़रमाया कि हिम्मत **मदनमोहन लाल** से ज़्यादा किसी में नहीं है। **मोहब्बत** तुम से ज़्यादा किसी में नहीं है। **अहंकार** जाने के बाद **कुतुब-उल-अक़ताब** की हालत पैदा होती है।

रामेशर प्रसाद घूमेगें मगर बहुत देर में। जिस काम को तुम मेरे सुपुर्द करोगे उसका मैं जिम्मेवार हो जाऊंगा।

अर्ज़ किया, जब मैं ही आपके सुपुर्द हूं तो सब काम भी आपके सुपुर्द हैं।

फ़रमाया, अगर यह बात है तो इत्मीनान रखो। मगर ख़्याल काम का तुम्हीं को करना पड़ेगा क्योंकि मेरे Instrument तुम्हीं हो।

सवाल मदन मोहन लाल= क्या सबके लिये यह बात है?

जवाबः फ़रमाया= जिसको **एतक़ाद** है उसके लिए यह बात है। **एतक़ाद** में कमी हर शख़्स के है।

(नोट) यानी पूर्ण एतक़ाद हो जाने पर कुछ करना बाक़ी नहीं रहता। बाअलफाज़ दीगर, हर शख़्स में कोई न कोई कमी रहती है; जब तक मुकम्मिल न हो जावे, उस वक़्त पर जाकर एतक़ाद का इन्कशाफ़ ही कर पूर्ण एतक़ाद हो जाता है।

उनमें (श्री कृष्ण लाल) मोहब्बत की कमी नहीं है। मगर उनके तरीक़े ठीक नहीं हैं।

25.6.44

मदन मोहन लाल का क्षेत्र बदायूँ (Badayun) होगा।

27.6.44

मैं उनको (मदन मोहल लाल) इकलौता बेटा समझता हूं यानी मुझको उनसे ऐसी ही मोहब्बत है जैसी कि किसी को, जिसके एक औलाद होती है, मुहब्बत होती है। वो अपने ख़्यालात नहीं छोड़ते। उनको भरने की ज़रूरत नहीं। कभी-कभी सतसंग इसके मुत्तािल्लक़ करा दिया करो।

28.6.44

हिदायात मुत्तालिक़ा मदन मोहन लाल= दूसरों को नफ़्सी करना बताते हैं, ख़ुद अमल नहीं करते।

नम्बर 1- ऐसी बाते न करें जिनसे दूसरे के दिल को सदमा हो। मुझको उनको यही बताना है। अगर इतनी मेहनत किसी दूसरे पर की जाती तो न मालूम क्या से क्या हो गया होता। अंदरूनी हालत में कोई कमी नहीं है। उनके लिए वक़्त थोड़ा है। इस कशमकश में कब तक पड़े रहेंगे।

नम्बर 2- मौलवीयाना तरीक़े से तालीम करना छोड़ दें। उम्र का ख़्याल न बांधें। किसी को अपने आप से कमतर न समझें।

जो मौलम्मी की बातें तुमने (R.C.) श्री किशन लाल (ज़रिये ख़त मौरख़ा 27.6.44) को लिखी हैं, वो सब को मालूम होना चाहिए। उसकी एक नक़ल मदन मोहन को दे दो और एक डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय को भेज दो। और उसमें यह लिख दो कि यह एक शख़्स का कश्फ़ है। तुमको इसको तामील करना चाहिए। और उसमें वो भी लिख देना जो तुमने (श्री किशन लाल को) आपस के भले की बाबत लिखा है। और यह कि डॉक्टर श्री किशन लाल को तहरीर कर दिया गया है। तरीक़ा ख़ूब लिखा है; और मिसाल भी अच्छी दी है। अगर इस पर उन्होंने अमल कर लिया तो तुम्हारा कुछ काम बन जावेगा। फूफाजी (मुंशी रघुबर दयाल साहब) की जानबख़्शी नहीं होगी। बुध सेन की मौत से मेरी बदनामी मिट गई। तुमने ग़लती की जो बुध सेन की रूह की शान्ति के लिए ख़त में तहरीर किया। वो मेरे मोरिज़े इताब हैं। हंस कर फ़रमायाः- ख़ैर इन्सान को इन्सान का ख़्याल (हमदर्दी) होता है। मैंने तुम्हारी ग़लती माफ़ की। अब

उनके एवज़ दूसरे शख़्स को बना दो। जब यह समझ में न आया तो दरियाफ़्त किया।

फ़रमाया= अपनी दुआ दूसरे के लिए मुन्तक़िल कर दो। वो मेरी समाधि पर जाता था.......... जब मदन मोहन ने अर्ज़ की कि दुआ को रामस्वरूप मरहूम (जो मुलाज़िम चची थे और दरिया में डूब कर मरे थे) उनको मुंतक़िल कर दी जावे।

फ़रमाया= उसकी रूह को शान्ति नहीं हुई। वो आदमी अच्छा था मगर मजबूर। उसके वास्ते जो कुछ किया जाये वो थोड़ा है। उसने नफ़्सकुशी बहुत की थी। बुधसेन एक अंधरे ग़ार........ था। नक़्शा सामने आ गया कि वो एक अंधेरे ग़ार में पड़ा है।

29.6.44

भंडारे के वक़्त अगर कोई ऐलान न करे तो बाबू मदन मोहन लाल ख़ुद ऐलान कर दें। ब-दरियाफ़्त फ़रमाया, कि यह इख़लाक है कि चची (साहिबा) से सबसे पहले कहना चाहिए।

मौलवी साहिब (मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहिब) अपनी उस्तादी दिखलाएंगे। उनको **(मदन मोहन लाल को)** अपनी हालत का पता नहीं। हालत खोली भी गई मगर एहसास नहीं किया। इस बेअसना में ख़्याल उठा कि अरसा हुआ तब मुंशी ने फ़तेहगढ़ में एक मरतबा यह कहा था कि बिरजू भईया ने बलदेव प्रशाद वैध को एक तवज्जो में विलायत पार करा दी।

अज़ खुद इरशाद हुवा कि यह धोखा देना है। सिवाये तुम्हारे या बाबू मदन मोहन लाल के, अगर हिम्मत बांधें, इस वक़्त तक कोई नहीं कर सकता। उनकी **मदन मोहन लाल** हालत सब खुल चुकी है। सिवाय उस राज़ के जिसका खुलना अभी मुनासिब नहीं है।)

मुत्तालिक़ भंडारा कि उस वक़्त क्या किया जाये

डॉक्टर कृष्ण स्वरूप साहब को सतसंग कराने के लिए मजबूर करो। वहां के लोगों से कह दो कि डॉक्टर सहाब मौसूफ़ के यहां सतसंग को जाया करें। उनके Shock को दूर कर दो।

यह तुम अभी कर सकते हो। उनको बुजुर्ग समझना और करना वो ही जो तुम्हारा दिल चाहे। किसी को न अपने से बड़ा समझो और न छोटा (अलबत्ता) व्यवहार अदा होना चाहिए।

नोट मदन मोहन लाला बाबत Shock

हज़रत क़िब्ला के विसाल के बाद जब बाबू ब्रजमोहन लाल और मुंशी जयपुर गये थे और वहां 70-80 भाईयों का मजमा था और डॉक्टर कृष्ण स्वरूप सहाब ने तवज्जो दी थी। तो फिर दो भाईयों ने बाद तवज्जो यह कहा था कि चचा आपने तवज्जो ठीक नहीं दी और उसमें ये-ये ख़ामी थीं। वो बेचारे शर्मिन्दा हो कर ख़ामोश हो गए थे। जिसका नतीजा यह निकला था कि वहां का जलसा द्रहम बरहम हो गया था। इसी वजह से कबीदा ख़ातिर होकर डॉक्टर साहब ने Interest लेना छोड़ दिया था। चाची साहिबा ने दोनो बरखुर्दारान को ख़ूब डाँटा था। यह वाक़्या डॉक्टर साहब ने मुझसे उसके बाद वाले भन्डारे पर कहा था।

वक़्त शाम, बाद चले जाने पंडित रामेशर प्रसाद

इरशाद हुआ= कि उनको इत्तला दे दी, अच्छा किया ताकि आइन्दा जब वो घूमें तो उनको यह कहने का मौक़ा न होगा कि मुझको ख़बरदार नहीं किया। वो बहुत देर में घूमेंगे। उनको मेरे दर्शन नहीं होतें। उन्होंने मेरा एक आकार क़ायम कर लिया है। अपनी ख़याली क़ुव्वत से। चूंकि अनका ख़्याल है कि मैं खुश हूं इसलिये वह वैसी तस्वीर बना लेते हैं। मेरा बुलाना आसान नहीं। अलबत्ता बाज़ मर्तबा अपनी ख़ुशी से ख़ुद मोहब्बत वालों के पास चला जाता हूं। सब शख़्स अपने मन से बातें करते हैं। जब नफ़्स मुकम्मिल हो जावे तब उम्मीद करना चाहिए। जिसमें नफ़्स का असर बाक़ी होगा वो उसी शख़्स को खींच सकता है जिसमें नफ़्स का असर बाक़ी है। रामेशर में अभी निस्बत भी पैदा नहीं हुई। बहुत कम ऐसे लोग (मर्ददीन) हैं जिनमें मेरी निस्बत मौजूद हो। राम सिंह में मेरी निस्बत शुरू हो गई, बशर्तेकि वह उसे क़ायम रख सकें।

30.6.44

राम स्वरूप मुनीम बेख़्याल नहीं गया।

लोगों ने अपना वक़्त कानपुर वालों के साथ बड़ा ख़राब किया। उन्हों (लोगों यानी मुरीदैन) ने मुझको तालीम का मौक़ा नहीं दिया। उनके ख़्याल का ज़्यादातर अटकाव वहीं था। इसलिए लोगों को मैं उनके (नन्हे) पास भेज देता था। तुम मेरी ग़लतियों से तजुर्बा हासिल करो।

नोटः- यह बातें सुन कर बिगड़ी हुई हालत सामने आई और मुझको (R.C.) तकलीफ़ हुई।

फ़रमाया= तुम बहुत कुछ सम्भाल चुके हो। जब लोग सामने आऐंगे तब पता चलेगा।

Universal love= जहां पर सबकी हस्तियों का अभाव मालूम पड़े; एक ही चीज़ भाँसे। जब यह हालत पैदा हो जाए और कोई शख़्स इस हालत को तरक़्क़ी देना चाहे तो उसमें अपने आप को भी शामिल कर दे, और फिर उसको अपना लें। इससे पेश्तर अगर कोई इस बात को बढ़ाता है तो अगर दस से मुहब्बत पैदा करता है तो बीस और मुहब्बत करने के लिये रह जाते हैं। पहली हालत को अगर ज़्यादा जिला देना चाहे तो उस कैफ़ियत में जिसमें आपने आप को शामिल किया है, मोहब्बत ही मोहब्बत ख़्याल करे।

नक़्शा सामने आ गया। यह बात अलफ़ाज़ में बयान करना बहुत मुश्किल है।

तुम्हारी डायरी अगर कोई ग़ौर करे तो यह सब बातें बता सकती है। हमारे यहां एक ही बात को पूरा करने में कुल जिंदगी खत्म नहीं करा दी जाती। इस बात से भी काम नहीं बनता।

पीर वो होता है जिसको आदर्श मान लिया जाता है और पीर सोहबती बो है जो उस आदर्श को पुखता कर दे। दुनियावी तकलीफ़ से अपने दिल को बचाए रखना। ये बात सोहबत से हासिल होगी। उस शख़्स की सोहबत ज़्यादा मुफ़ीद होगी जो क़ुतुब के दर्जे तक पहुंच चुका है। हमारे ख़ुल्फ़ा को क़ुतुब से ताल्लुक़ था।

1.7.1944

मुताल्लिक़ा (R.C.)= वो फ़िलासफ़ी जो तुम्हारे दिमाग़ में घूम रही है, अब लिखना शुरू करो। तरतीब बाद में दी जावेगी। बदरियाफ़्त कि में Point को फैला नहीं सकता; फ़रमाया= इबारत तुम अच्छी लिख सकते हो। मश्क़ होने पर सब ठीक हो जावेगा। तुमने जब डायरियां लिखना शुरू की थीं तो तुम सफ़े के सफ़े लिखे चले जाते थे। शुरू कर दो।

इरशाद= **फ़नाए क़ल्ब** की यह हालत है कि ख़्याल तो आते हैं मगर गुमशुद्गी की कैफ़ियत क़ायम रहती है। और जो ख़्यालात आते हैं उनसे नफ़रत रहती है। गुमशुद्गी कई तरह की होती है। हर Stage पर गुमशुद्गी मौजूद है। मगर एक दूसरे में फ़र्क़ रहता है। पहली तरह की गुमशुद्गी का नाम **तस्फ़ियाए-क़ल्ब** है। इसमें भारीपन नहीं होता।

तज़किए नफ़्स हो जाने पर विवेक शक्ति बढ़ जाती है। दिल बदनाम है; ख़्यालात का मख़ज़न (पेशानी की तरफ इशारा करके बतलाया) यह है। (नोटः जिसको त्रिकुटी, दोदल कमल, आज्ञाचक्र और नुक़्ताए सुवैदा कहते हैं) रात में दरख़्त के ऊपर कपड़ा नहीं डालना चाहिए। (उस वक़्त इरशाद हुआ जबकि कुरता सूखने के लिए दरख़्त नवाडी पर डाला था) श्याम विहारी लाल को ख़त लिख दो। श्रीकिशन लाल और चतुभुर्ज सहाय को बराबर ख़त लिखते रहो। जवाब का इंतज़ार मत करो ब्राह्मणों पर खुदा की **मार** है। उन पर ज़्यादा ताक़त सर्फ़ करना बेकार होगा।

2.7.44

तुमसे लोग ज़्यादा रुजूअ होगें। तुम्हारा स्वभाव मुझसे मिलता-जुलता है, इसलिए मेरी हस्ती का तुममें पैवस्तगी का यक़ीन रहेगा। Correspondance बढ़ेगी। और उनका जवाब भी ठीक पहुंचेगा। तुम्हारी ख़ूबियाँ अभी तुम पर खुद रोशन नहीं हैं। इन कामों को जो तुम्हारे मुत्तालिक़ हैं बेगार न समझो। जैसा कल तुमको समझाया गया है। नोट वह था। जब तक नफ़्सानी फ़ेल में मज़ा आवे तब तक तज़किया नफ़्स पूरा नहीं

हुआ। तज़किए नफ़्स हो जाने पर सोहबत वग़ैरह में मज़ा नहीं आता, बल्कि बेगार के तौर पर उससे वो फ़ेल सरज़द होता है। ये उसूल अपनी ही **(RC)** हद तक ठीक है। तुम्हें अपने उसूल पर चलना चाहिए। मेरा और तुम्हारा ताल्लुक़ बराहे रास्त है। तुम्हारे लिए उन उसूलों की पाबंदियाँ बेकार साबित होंगी। उनकी (मदन मोहन लाल) निगाह इतनी गहरी नहीं है। तुम्हारे पास जो बात आती है वो असल से आती है। उसमें मिलौनी नहीं होती।

तुमको (R.C.) मैंने उलझन में छोड़ा है। इसका तुमको इनाम भी मिलेगा। तुम्हारा अफ़साना एक मुद्दत तक ज़बाँ ज़द ख़लायक़ रहेगा। तुम्हारे लिए ये पाबंदी नहीं होगी, इसलिए कि लोग मेरे हाथ पर बैंअत होंगे। तुम मेरे हर ख़लीफ़ा के मुरीदों को तालीम दे सकते हो।

3.7.44

जहां मैं बैठता हूं वहां मेरा फ़ोटो मत लगाना। मुझे लोगों ने फ़ोटो खिंचाने के लिए मजबूर किया था। फ़ोटो की अब परस्तिश शुरू हो गई। करुणाशंकर ग़लिबन चार-पांच रोज़ में आयेंगे, इसलिए उनको ज़रा और तैयार कर लो। बाबू मदन मोहन लाल वकील को हुकमन मदन मोहन लाल ने आज बैअत किया।

4.7.44

बैअत शुदा लोगों की एक फ़ेहरिस्त बना लो मगर उसमें रामेशर का नाम मत रखना। उनको तजदीदे बैअत करना होगी। जितनी तेज़ी तुम अपने भाईयों की दुरस्ती में कर रहे हो उतनी उनमें कुव्वते जाज़िबा नहीं है; लिहाज़ा साथ-साथ उसको भी बढ़ाते चलो। तालीमें विरादरान का Mania अच्छा है इससे मुझे जल्द तक़वियत हो जाएगी। तुम्हें तालीम को field मिलेगा।

5.7.44

सतसंग मदन मोहन लाल के घर पर हुआ करेगा। तुम्हारे पास सिर्फ़ एक-एक

आदमी आया करेगा। इसके मायनी यह नहीं हैं कि तुमको सतसंग कराने का इख़्तयार नहीं। तुमको कुल इख़्यतयारात हासिल हैं। **विश्व** बाबू को अज़सरे नौ बैअत करना होगी। तुम बैअत मुन्तक़िल भी कर सकते हो। यह अब भी मुमकिन है। उनका Connection सिर्फ़ उन्हीं (नन्हे) से रह गया है। अभी उन पर बैअत का भूत सवार है। इसलिए कोशिश रायगाँ होगी। आइंदा के लिए तुमको बतला दिया गया। **बलदेव प्रशाद वैध** का फ़ेहरिस्त से नाम निकाल दो। ग्वालियार में एक साहब और हैं जिन्होंने मुझसे कोई ताल्लुक़ नहीं रखा।

7.7.1944

इरशादात:- मैं कहीं जाता नहीं हूं; तुम्हारे पास मौजूद रहता हूं। किस तरह; इसका राज़ तुम्हें जिस्म छोड़ने पर खुलेगा। मुझे तुम्हारी मोहब्बत का अहसास है। **मामलात में पेंच पड़ रहे हैं।** इसलिए मैं तुम्हारा इज़हार नहीं चाहता। फ़िलहाल ख़त्तोकिताबत रोक दो। हिम्मत न हारो कामयाबी होगी। मुतालिक़ा **श्रीकिशन लाल=** तुम्हारी तहरीरात पर उन्होंने ग़ौर नहीं किया। ये बे-वुक़अती मुझे नागवार गुज़री। वो तरक़्क़ी से रुके हुए हैं। परेशान न हो। **डॉक्टर श्रीकिशन लाल** को तवज्जो देना बंद कर दो। **डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय** को तंदरूस्ती का ख़्याल रखना चाहिये। उनकी Energy भी बढ़ाओ। उनसे राज़ खोलने में कोई हर्ज नहीं मगर यह ताकीद की जाये कि दूसरे से न कहें। यह आदमी तुम्हारे कारआमद साबित होगा। ये हालात जो तुमने लिखे हैं यह भी सब उनको बताये जा सकते हैं। मगर उनके पास ये हालात confidential रहेंगे। इसकी नक़ल वो नहीं रख सकते। ये हालात आईन्दा generation के तजुर्बा हासिल करने के लिए हैं। आवाम को बताने की ज़रूरत नहीं। जैसे मैंने अपना तजुर्बा छोड़ा है वैसे तुम भी अपना तजुर्बा छोड़ना। **डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय** से तुम काम ले सकते हो। उनका Nervous system weak है। उनसे फिर कह देना कि ये राज़ हरग़िज-हरगिज़ न खोलें। जब तक के उसका वक़्त न आ जावे। उनके बुलाने में कोई हर्ज नहीं। मदन मोहन लाल को पानी का इजाज फ़ायदा देगा। (यानी रंग वाली बोतलों का तैयार शुदा पानी)।

8.7.44

बाबू **मदन मोहन लाल** जिस वक़्त ऐटा जाएं तब **डॉक्टर साहब** से काफ़ी सतसंग रहना चाहिए। सोसायटी की हालत जैसी कि बिगड़ी हुई हैं ऐसी उम्मीद न थी। अब देख लिया ये हालता है। (नक़्शा और कैफ़ियत दिखलाई) एक-एक करके सतसंग देने की ज़रूरत है। फिर ग़ायबाना काम भी होता रहेगा। मुझको लोगों ने **मरा** हुआ समझ लिया। जब लोगों ने मुझ को **मरा** हुवा समझ लिया तो फिर उस धार में भी रुकावट पैदा हो गई। और अक्सर लोगों ने तो मुझसे **ताल्लुक़** ही नहीं रखा। सवाल R.C.= ये बातें सुन कर मेरे तो होश उड़ते हैं।

फरमाया मुझे भी नाउम्मीदी होती है मगर सबसे नहीं।

9.7.44

आज बाहुक्म हज़रत क़िब्ला ब्रादरम करुणा शंकर को इजाज़ते शर्तिया दी गई।

10.7.44

करूणा शंकर को कुबरा के मैदान में खींच दो। (हज़रत क़िब्ला को उनकी नफ़्सकुशी पसंद आ गई।) अपना वक़्त रायगाँ मत करो। कुछ-न-कुछ करते रहो खाली हो तो तवज्जो दो, टहलो, उम्दा-उम्दा किताबें पढ़ों, घर के काम-काज में दिलचस्पी लो, तुम्हारे ऊपर बड़ा बार है।

सवाल= ख़ाली वक़्त में अख़बार पढ़ सकता हूं?

इरशाद= कि हां। मगर बाबू **मदन मोहन लाल** की तरह नहीं। ख़बरें तुम्हारे पास मौजूद रहती हैं जब चाहो तब मालूम कर लो। अखबार कोई अच्छी चीज़ नहीं। अगर अंग्रेजी बढ़ाना चाहते हो तो Editorial note पढ़ लिया करो। उससे अच्छी ख़बरें अख़बार में नहीं मिलेंगी जो मैं दूंगा। तफरीहन पढ़ लो तो मुमानियत भी कोई ऐसी नहीं। और इसका Impression दिमाग़ में नहीं रहना चाहिए। Critics अगर कोई बनना चाहे तो अखबार पढ़े। तुम्हारा काम यह नहीं है, न तुम इसके लिए आए हो। **जिस चीज़ से दिलचस्पी हो वह रूहानियत के लिए मुज़िर है।**

नुस्ख़ा= अगर अपने पिंडी दिमाग़ को ब्रह्माही दिमाग़ में मिला दिया जावे तो दिमाग़ी ताक़त बढ़ जायेगी। गो तुमको उसको करने की ज़रूरत नहीं। ख़्याल करने की देर है Power मौजूद हो जायेगी। सवाल **मदन मोहन लाल=** मैंने सन 22 ई० में एक ख़त सख़्त अलफ़ाज़ में लिखा था जो हज़रत ने श्रीकिशन लाल को दे दिया था और उन्होंने मुझको वापस किया। मैं सख़्तगोई की माफ़ी चाहता हूं।

इरशाद= मैंने उनकी (मदन मोहन लाल) की हर ख़ता माफ़ कर दी। इसकी वजह है कि उनको मोहब्बत है। मगर मौजूदा हालत को जो नहीं सम्भालते इसका मुझे अफ़सोस है। **उनमें कुदरत मौजूद है। तब मैं उनको ज़िम्मेदार ठहराता हूं।** (नक़्शा सामने आ गया)

इरशाद= नक़्शा ठीक समझ में आया और इसको सलव करने की कोशिश करो। मगर मुश्किल यह है वो फिर बना लेंगे। उनकी सोहबत चचा से बहुत रही है। कुछ उस सोहबत का भी असर है। वो (चचा) उनकी हर बात दाबते चले गये! कुव्वत का एहसास नहीं रहा। उनकी will power ने उनको कम हिम्मत कर दिया। उनकी हालत के मुताबिक़ उनको सबक़ नहीं दिया गया (यानी उनको हालत से आगाह नहीं किया गया) ताकि उनकी हालत में **जिला** होती। **भरने में कोई कसर अलबत्ता नहीं छोड़ी।** उनमें साहब (**नन्हे**) ने बाबू **प्रभुदयाल** को सलब किया और कम्बख़्त को तमीज़ न हुई। अक्सर लोगों को उनकी शक्ल देख कर यह ख़्याल पैदा होता था कि मेरी शक्ल और उनकी (प्रभु दयाल) बहुत कुछ मिल गई है। चूंकि उनका (**नन्हे**) (यानी चचा) का अनुभव पहले से जवाब दे चुका था। (उनको) ख़्याल पैदा हुआ कि कहीं ये साहिब (प्रभु दयाल) मेरी गद्दी पर रौनक़ अफ़रोज़ न हो जाऐं, इसलिए यह हरकत एतिहयातन की गई। मगर चूंकि मेरी मंशा कुछ और थी लिहाज़ा इस मद में उनकी (प्रभु दयाल) हिफ़ाज़त में ज़्यादा सरगदाँ रहा। और वो उन पर ईमान पहले ही ला चुके थे। यह एक मज़ीद बात थी। **मैंने जो कुछ हिफ़ाज़त की वो तुम्हारी भी की इसलिए की मेरी नस्ल बरबाद न हो जाये**। वो आम लोगों से जो मेरे पास जाने को और सवाल पूछने को मना करते थे इसमें उनकी (**नन्हे**) की ख़ता न थी बल्कि उनको तालीम ही ऐसी दी गयी थी। सतसंग के लिए बजाए मेरे पास के अपने पास बुलाते थे। ये मुझे नागवार होता था। **प्रभु दयाल** अच्छा आदमी न था।

11.7.1944

इरशादात= मैं अगड़म-बगड़म आदमी सतसंग में भरना नहीं चाहता। मैंने अर्ज़ किया कि जो साहब इजाज़त याफ़्ता काम कर रहे हैं नादनिस्ता ऐसा कर जाते हैं। उनको कोई ऐसी रोशनी या बात दी जावे ताकि ऐसी ग़लती न करें। ये लोग

इरशाद= ये लोग (मुराद इजाज़त याफ़्ता लोग) अपनी धुन में ग़लती कर जाते हैं। समझ को काम में नहीं लाते। इसलिए मैं मुनासिब समझता हूं कि सतसंग में नए लोगों को शामिल करने से पहले तुमसे Consult कर लिया करें। इस मद में सिर्फ बाबू **मदन मोहन लाल** क़ाबिले माफ़ी हैं। (बक़िया का नक़्शो पशेनज़र हो गया) यह कि कोई शख़्स अपनी अहमियत के ज़ोम में सतसंग बढ़ाने की कोशिश करता है। (मुराद **श्री किशन लाल**)। कोई शख़्स हिमाक़त का नमूना बन कर सतसंग के मैदान में काम करता है। (मुराद **बाबू श्याम बिहारी लाल**) उनके बतलाये हुए लोग Dull रहेंगे। **डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय** ने तरीक़ा बेहतर इख़्तियार किया। उनको आदमी भी बेहतर मिले मगर वो फ़ायदा न पहुंचा सके। जितना काम उन्होंने बढ़ाया है वो सम्भालने के ना क़ाबिल हैं। वो अब तक एक भी ऐसा न बना सके जो उनका काम सम्भालने में मदद देता इसके लिए **चिट्ठियां** जारी करना पड़ेंगी कि अगड़म-बगड़म न भरे जायें। तुम्हारी तालीम न करना मेरी नाखुशी का बायस होगी इसलिए कि तुम्हारे अंदर बैठा-बैठा मैं ही यह हुक्म दे रहा हूं। **करूणा शंकर** को भी हिदायत कर दो कि जब सतसंग में कोई आदमी शामिल करें तो उसके हालात लिख कर तुमसे पूछ लें। और अगर कोई शख़्स ऐसा मिल जाये कि उनका दिल क़तई तौर पर इत्मिनान कर ले तो पूछने की ज़रूरत न पड़ेगी। और यही क़ायदा सब लोगों के लिए है। **डॉक्टर श्री किशन** से तुम्हारा कहना-सुनना इस वक़्त कुछ कारगर न होगा। जब उनको ठेस लगेगी तब उनको ख़्याल होगा। जब उनको ये इत्मिनान हो जायेगा कि कोइ शख़्स उनसे ज़्यादा मेरा मोहब्बत करने वाला मौजूद है तब होश दुरुस्त होगें। **असली मोहब्बत वो है कि न किसी को यह पता रहे कि गुरु मुझसे मोहब्बत करता है या मैं गुरु से मोहब्बत करता हूं। ऐसी बात सिर्फ़ एक में पैदा होती है। और जिस में पैदा होती है उसको यह पता नहीं चलता है कि मैं लोगों को मोहब्बत करता हूं या वो मुझको मोहब्बत करते**

हैं। जिसमें यह बात पैदा हो गई उसने ज़ात से पहले ही Jump में सम्बंध क़ायम कर लिया। ऐसी मिसाल दुनिया में बहुत कम होती हैं। और यह बात हर एक से Expect नहीं करना चाहिए। (मोहब्ब्त का नक़्शा इस बात के मुआज़ना करने के लिए पेशेनज़र हो गया)। तफसील नक़्शा= अगर गुरु ने चेले से मोहब्बत की तो आशिक़ गुरु हुआ और वो माशूक़ हुआ। और अगर चेला (मुरीद) ने गुरु से मोहब्बत की तो वो आशिक़ और गुरु माशूक़ हो गया। रिश्ता (बंधन) दोनों सूरतों में क़ायम रहा। (शिनाख़्त यह है) जिसमें सब से ऊपर वाली कैफ़ियत होगी तो अगर उससे यह पूछा जाये कि उसमें (यानी गुरु-चेला) कौन आशिक़ और कौन माशूक़ है तो उसका ख़्याल कोई जवाब न दे सकेगा।

बदरियाफ़्त इरशाद हुआ= कि Transfer of life का तरीक़ा आख़िर वक़्त पर बतला दूंगा। अभी बतलाने से तुम घर की तकालीफ़ से परेशान होकर अमल न कर बैठो।

12.7.1944

सवाल किया= जब ऑर्गनाईज़ेशन (Organisation) की बुनियाद डाली जाये तो अपने पीर भाईयों को जो ब्रजमोहन लाल वग़ैरा के क़रीब हों उनको उनके पास सतसंग के लिए जाने की इजाज़त देना चाहिए या नहीं?

इरशाद= वो उन लोगों को ख़राब करेंगे और अपनी तरफ़ खींचने की कोशिश करेंगे।

R.C. मुझ को ख़्याल हुआ कि अब तक तो मेरी यह नियत रही कि हस्बेरिवाज भाईयों से लेने के मैं उनकी इमदाद करूं, आईन्दा ईश्वर जाने।

इरशाद हुआ कि इसका भी रिवाज डालने की ज़रूरत नहीं।

सवाल मदन मोहन= इनके (R.C.) के सामने हालत का नक़्शा आ जाता है, मेरे सामने क्यों नहीं आता?

इरशाद यह चेले की क़ाबलियत हुआ करती है कि **गुरु को अपनी तरफ़ खींच ले** और यह बात **उस शख़्स में पैदा होती है जो पहले ही बहुत सी मंज़िलें पहले तय कर चुका हो। गुरु यहां पर ऐसे मजबूर हो जाते हैं कि अगर उसको छोड़कर दूसरे को करना चाहें तो नहीं कर सकते। यह बात ख़ुदादाद होती है। इसमें अपना बस नहीं। मुझको आक्षेप करना बेजा है। मुझ को किसी से द्वेष नहीं। ये तुम्हारे उन ख़्यालात का जवाब है जो तुम मुझसे अक्सर कहते रहते हो।**

मुताल्लिक़ा **मदन मोहन लाल= मेहनत किसी की रायगाँ नहीं जाती। उम्मीद रखना चाहिए।** उनको इस मेहनत के करने की ज़रूरत नहीं जिसकी वो सोच रहे हैं। **ख़्यालात की दुरूस्ती की सिर्फ़ ज़रूरत है। अपनी आड़बाज़ी छोड़ दें।** इसके बाद कुछ और बतलाऊंगा। उनमें उस बात (रूहानियत) में कमी नहीं है। **अपनी will बाँध दें कि यह बात दूर हो गई और उसका तसव्वुर किया करें। उनकी will power strong है। गो उनको इसका पता नहीं, वो सब कुछ कर सकते हैं। मैंने उनको सबसे अफ़ज़ल समझा। हिम्मत किसी जायज़ इस्तेमाल के लिए अगर लगाई जावे तो उस को अहंकार नहीं कहते।** यह बात (हिम्मत) **चतुभुर्ज सहाय** को भी बतला देना। उनमें भी इसकी कमी है। इनका (इन हालात का जो तुम लिख रहे हो) इज़हार तुम्हारे लिए मुज़िर होगा और **दुश्मनियां** बढ़ेंगी। **अगर मुझे तकलीफ़ देना हो तो इज़हार कर देना।**

सवाल (R.C.)= मैं बड़ा ख़ुशक़िस्मत हूं।

इरशाद= नहीं मैं बड़ा ख़ुशक़िस्मत हूं। अगर किसी शख़्स की कोई औलाद नेक पैदा हो जाती है तो बाप अपने आप को ख़ुशक़िस्मत समझता है। ये बातें हिम्मत अफ़ज़ा और सही भी हैं। अपनी हिम्मत को कभी आज़माना नहीं। डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय को अभी मत बुलाना। मैं ख़ुद बता दूंगा। मुझे डर है कि तुम जल्दी न कर जाओ। उनका नवर्स सिस्टम बेकार हो जायेगा। उनको बड़ी सहूलियत से बढ़ाने की ज़रूरत है। और ये बात मदन मोहन लाल को भी बता देना। उनके (डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय) के लिए अभी विलायते **उलिया** दूर हैं। मगर इसको देख कर उनको Shock नहीं होना चाहिए। इसमें यही **मस्लहत** है। वो मौजूदा हालत में **कुछ तमाशा** देखेंगे। उसके बाद उनको आगे बढ़ने की **रोशनी** मिलेगी। **ये मैदान जिसमें वो (चतुभुर्ज सहाय) हैं कोई मामूली मैदान नहीं है। अगर इसकी सब हालतें खुल जाऐं और सैर मुकम्मिल**

हो जाए तब बहुत सी बातें आगे की आसान हो जाती हैं। तुमको मुराद R.C. मैंने बहुत रोका है और यही वजह है कि तुमने हर बात पर मास्टरी हासिल कर ली हाँ यह बात ज़रूर है कि तुमने जितनी जल्दी मास्टरी हासिल की वह दूसरे को मुहाल है। मैं उनको (चतुभुर्ज सहाय) इसी तरीक़े में लाना चाहता हूं। मगर उनको देर लगेगी। वक़्त अलबत्ता उन्होंने बहुत बरबाद किया है। इस मैदान में जहां तक हो सके लोगों को खूब घूमाना। यह मैदान ऐसा नहीं है कि इसमें से किसी को जल्दी निकाल लिया जाये। जितनी इसमें जल्दी की जाऐगी उतनी ही आगे ख़ामी रहेगी। बहुत से बुज़ुर्ग इस मैदान को पार नहीं कर पाए। मगर मुकम्मिल समझें जाते हैं। इसको तय करने के बाद **लताफ़त** बढ़ जाती है। मगर ताक़ते परवाज़गी वो उस मैदान से अपने साथ लाता है। **इससे आगे और भी मैदान हैं मगर वहां आम लोगों की गुज़र नहीं।** (हालत का नक़्शा सामने आ गया) उनको (**मदन मोहन**) इस मैदान से जल्दी निकाल लिया गया। उनका दिमाग़ इस क़ाबिल न था कि उसकी **तज्जली** को बरदाश्त करता। वो और भी ज़्यादा बद इख़्लाक़ हो जाते। मगर इससे उनका कोई हर्ज नहीं हुआ। मुतालिक़ा **मुंशी माता प्रसाद**= इरशाद= शंकरानंद सभ्यता से गिरे हुए थे। उनको बाक़ायदगी बरतते हुऐं मुझसे दरियाफ़्त कर लेना चाहिए था। फ़ैज़ देने का उन्हें अख़्तियर था। उन्होंने अपने आप को बहुत क़ाबिल समझा। तुम चाहो तो उनका Connection तोड़ सकते हो। बशर्तेकि उन्हें (माता प्रसाद) एतबार हो जाये। **ये बातें आईंदा** आने वालों के लिए चिराग़ बनेगी।

दरियाफ़्त करने पर फरमाया= कुबरा में किसी हद तक उनका (**ब्रजमोहन लाल**) मल्का ज़रूर है। मगर तुम्हारे मुक़ाबले में नहीं है। जिन घाटियों में तुम घूमे हो वो उनको नसीब कभी नहीं हुई।

13.7.1944

लोग तस्वीरे हैरत बन गये हैं। सबसे पहले उनको एक **ख़्याल** पर डालना चाहिए और वो ख़्याल गुरु का होगा। उनको यह ताकीद करना चाहिए कि ग़ैर का ख़्याल आने से रोकें। और तुम भी इस काम में उनको मदद दो। **ख़्याल की पुख़्तगी तुम्हारी ज़िम्मेदारी रहेगी।** अगर कोई साहब इसके **खिलाफ़** हो तो उनसे कह दो कि और घर तलाश कर लें। यह **बुनियाद ऑर्गेनाइज़ेशन** की है। इन सबका ताल्लुक बराहे-रास्त

तुमसे रहेगा। बिला तुम्हारी इजाज़त तुम्हारे कामों में कोई शख़्स मुख़िल होगा जब यह काम इतना तकमील हो जाये या मुकाम्मिल का यक़ीन हो जाये तब आगे बढ़ना चाहिए। **बेकार** बातें न की जावें। **बेहूदा** गुफ़्तगू से परहेज़ करें। **नावलों** का पढ़ना बंद कर दें। दिल को (ग़ैर की) मोहब्बत में अलूदा न करें। **दोस्ती** के मिराक़ को छोड़ दें। सिर्फ़ **ख़ुदा** को दोस्त समझें। **धार्मिक** किताबें जिनमें ख़ुदा की मोहब्बत टपकती हो पढ़ सकते हैं। **दक़ीक फ़िलासफ़ी** देखने की ज़रूरत नहीं। आपस में **व्यवहार** विरादराना रहना चाहिए। एक दूसरे से **हमदर्दी, तकलीफ़** में मदद वगैरह **ख़ुश इख़लाक़ी इस सिलसिले की जान है**। हर शख़्स को उसूलों की पाबंदी करना लाज़मी होगी। ज़ाहिरा उसूल मसलन सुबह उठना, संध्या उपासना करना, घर के कामों को ठीक तरीक़े से अंजाम देना, हर शख़्स का फ़र्ज़ होगा।

14.7.1944

मेरे कुल वाक़्यात नज़र में हैं। ढील दे रहा हूं। Destruction का इन्तज़ार है। मैंने खत्तोंकिताबत इसलिए **बंद** कराई हैं कि **लोग मुँहज़ोर हो रहे हैं। आदमियत ग़ायब हो चुकी है। दिलाराम को लिख दो कि अभी तुमने आफ़ताब नहीं देखा। देखने पर आखें मिच जायेंगी। लोगों के ख़िलाफ़ तहज़ीब गुफ़्तगू मुझे नागवार होती है। ये बेअदबी मेरे साथ हो रही है।** तुमने अपने आप को ऐसा मिटाया कि तुम्हारे रग-रशे ने मुझसे हमअहंगी हासिल कर ली। तुम्हारी तोहीन कभी मुझे **बरदाश्त** नहीं होगी। **हमारे घर की तबाही में दुश्मनों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। अब देखें तुम्हें कोई कैसे नहीं मानता है।** मैंने ख़त्तो किताबत का सिलसिला इसलिए शुरू कराया था कि लोग आसानी से मान जाएें। **अब तुम भी ज़रा होश में आ जाओ। आंख बदलना पड़ेगी। लोग नुक़सान भी उठावेंगे। दिलाराम** ने बड़ी सख़्ती का जवाब दिया। उसने (**नन्हे ने**) अपनी आक़बत ऐसी बिगाड़ी कि किसी दीन का न रहा। **कन्डवा** इसी को कहते हैं (ख़्वाब वक़्त 4-5 बजे दिन) कि एक शख़्स सिरहाने आ कर बैठ गया और छुरी निकाल कर पहले उसने सिर के हर दो जातिन पावों पर छुरी फिराया यानी ज़ख्म पहुंचाना चाहा मगर छुरी गढ़ती नहीं थी। फिर उसने मेरी (R.C.) गरदन पर यानी टेटुऐं पर रखकर फेरना चाहा। मैंने उठा कर उसको दहलीज़ पर दे मारा और वही छुरी उसकी गर्दन पर रखी।

तब वो खुश।मद करने लगा और कहा कि वो मैं नहीं था, तुम्हारे यार-ग़ार थे। दुबारा उससे नाम पूछा और अग़लब था कि जान के ख़ौफ़ से बता देता कि फ़ौरन आंख खुल गईं। (मन में सुबह strike) हुआ कि रामेशर प्रशाद होगें क्योंकि इस आख़िरी ख़्वाब से थोड़ी देर पहले देखा था कि रामेशर प्रशाद आये हैं और इधर-उधर ताकझांक कर रहे हैं। जिससे बदी तरश्ह होती थी। वो ख़्वाब याद नहीं रहा।

वक़्ते शब= तुम्हारे ख़्याल को रामेशर की तरफ़ इस वजह से जाने को मना किया था कि उनमें जो **नन्हे** की तरफ़ से तुम्हारी ईज़ारसानी को जो ताक़त दी गई है उसको तकवियत न हो। चूंकि रामेशर ने उधर से क़तअ ताल्लुक़ नहीं किया, लिहाज़ा अब तुम **नन्हे** की दी हुई ताक़त को सलब कर लो। (सलब कर ली) अगर तुम नाखुश हो तो दिलाराम को भी Destruction की मद में शामिल कर लो।

मैंने अर्ज़ किया कि मैं नहीं चाहता। हुक्म हो तो दूसरी बात है।

काम सुपुर्द करदा जब ख़त्म कर चुका तो फ़रमाया= कि यह **ताक़तें** उसको दी जाती हैं जिस का ठंडा मिज़ाज हो। तुमने अपना मिज़ाज मेरी ही तरह का बना लिया है। अगर यह ताक़तें बाबू **मदन मोहन लाल** को अता की जातीं तो वह बहुत ज़ोर पकड़ जाते और मुझको साधना पड़ता। मैंने अर्ज़ किया कि मिज़ाज आपके मुताबिक़ ज़रूर है मगर बाज़ मर्तबा झन आ जाती है।

फ़रमाया= यह पिदरी असर है।

15.7.44

जैसे मैंने नालायक़ों को भरा है ऐसे तुम न भरना। तुम अपनी तंदरुस्ती का ख़्याल रखो। तुम्हारे सामने बहुत काम है। सिर्फ़ दवा ही फ़ायदा नहीं करेगी। हाथ पैर चलाना चाहिये। अगर सुबह को टहलने नहीं जाते तो शाम को जाया करो। तुम वक़्त बहुत बेकार खो रहे हो। इल्मी क़ाबलियत बढ़ाने की ज़रूरत है।

मैंने अर्ज़ किया कि कुछ तंदरुस्ती, कुछ काहिली काम करने नहीं देती। और इसमें मैं ही ख़तावार हूं।

फ़रमाया= यह मेरी ख़ता है। तुम्हारी सब ख़ताऐं मेरी ही ख़ताऐं होंगीं। तुम्हारी

तंदरूस्ती देख कर मुझको दुखः होता है (दुखः का अहसास हुआ) खाना वक़्त पर खाओ। आराम के वक़्त आराम करो। दूध का इस्तेमाल तुम्हारे लिए मुफ़ीद होगा। घी ज़्यादा फ़ायदा नहीं करेगा। तुम्हें दो बातों का ख़्याल रखना चाहिए। एक **तंदरूस्ती;** दूसरी Self Respect मैंने Self Respect की तारीफ बताई कि मैं यह समझे हुए हूं। वो यह कि किसी से ऐसा बरतावा न करे कि अगर वो तुम से वैसा ही बरताव करे तो नागवार न हो।

फ़रमाया= यह सतजुगी बात है। हर शख़्स से Reserve रहना। किसी को ज्यादा बातचीत का मौक़ा न देना यानी गुफ़्तगू में तूल नहीं देना चाहिये। अपने खांगी राज़ों को दूसरे से न कहना। अपने आप को कमज़ोर न समझना। ऐसी कोई बात न कहना कि दूसरे लोग गुस्ताख़ी पर आमदा हो जावें। यह सब Self Respect की तारीफ़ में आती हैं।

16.7.1944

शिष्य का **कारण** शरीर गुरु अपने में लय कर लेता है। जिस वक़्त कारण शरीर लय कर लिया जाता है तब संस्कार बनना बंद हो जाते हैं। (नक़्शा सामने आ गया) **पिंड** का **कारण** ब्रह्मांड है और **ब्रह्मांड** का कारण पारब्रह्मांड है। जो बात पारब्रह्ममंडल में होती है वो ब्रह्ममंडल में उतरती है। और ब्रह्ममंडल से पिन्ड में उतरती है। और फिर भोग की शक्ल में हो जाती है। गोया पिन्ड में जो भोग की शक्ल पैदा हुई उसकी इब्तदा पारब्रह्ममंडल है। ऊपर वाला मसला जो लिखाया है यह बहुत दक़ीक़ है। और तुम्हारा दिमाग़ आज बेक़ाबू है। जब सहूलियत पर होगे तब बताऊंगा। कुछ और लोगों की भी तुमको बैअत शिकस्त करना पड़ेगी। और उसका एलान करना पडेगा। **गंगा सेवक** अपने कामों से तौबा करें और फिर से बैअत करें तो कुछ हो सकता है। कोई किसी भी सिलसिले का बैअत शुदा हो तुम उसकी बैअत शिकस्त कर सकते हो। मगर ऐसा करना नहीं। गंगा सेवक का ऐलान कर देना। उन्होंने अपनी बैअत खुद शिकस्त कर दी। अगर तुमने किसी के लिए यह कह दिया कि दिमाग़ ठीक नहीं है तो असर हो जायेगा। अगर इत्तिफ़ाक़ से ऐसा हो जाये तो खेंच कर ज़ायल कर देना। और यह तरकीब तुम अपनी हर ग़लती पर कर सकते हो। अगर किसी शख़्स पर किसी **बददुआ** का असर हो तो उसको **आलमें क़ुद्स** में जा कर खींच लो। अगर तुम उसके असर

को ज़ायल करना चाहते हो। इसका जवाब नहीं होगा। यहां के **(आलमे कुद्स के)** पहुंचे हुए लोग उंगलियों पर गिनने के लायक़ हैं। तुम्हारा क़दम **उससे** भी **आगे** को जा रहा है। तुम्हारा कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। जिस तरह से तुमने और आलमों से निक़लने की जल्दी कोशिश की है वैसी ही तुम वहां भी कोशिश कर रहे हो। दूसरों के साथ इतनी जल्दी नहीं करना चाहिए। अगर अपनी **पैदायशी लताफ़त** पर ग़ौर करो और अगर ऐसा कोई शख़्स मिल जाये जिसमें यह बात मौजूद हो तो यह Sign आगे बढ़ने का होगा। यह मुक़ाम फ़रिश्तों को भी नसीब नहीं है। उनको इस मुक़ाम के सैर की आरज़ू रहती है। यह सब बातें मैंने इसलिए बताई हैं जिसमें तुम अपने आप को कमज़ोर न समझो। तुम्हें पिछले **जन्म** में रूहानियत से बड़ा ज़ौक़ और शौक़ रहा है और तड़प भी इंतहाई रही है। ऐसी तड़प में तुम्हारा इंतक़ाल भी हुआ है। रहनुमा तुमको कोई न मिला। और इस तड़प में तुमको इंतहाई तकलीफ़ हुई है। बाल-बच्चे तुम्हारे बहुत थे। और ग़ुरबत से गुज़ारा था। बीबी तुम्हारी बहुत नेक और सीधी थी। (नक़्शा सामने आ गया) जो ख़मीर तड़प का तुम अपने साथ लाए हो वो अब तक नहीं छोड़ा। ब्रह्माण कुल में पैदा होने के बाद इस Stage पर नहीं पहुंचता जो तुम्हारा Stage है। **मुर्करर फ़रमाया=** यह तजुर्बा है, क़ायदाए-कुलिया नहीं है।

तुम क़ौम के बनिये थे। पिछले जन्म में **मदन मोहन लाल** किसी राजाई ओहदे पर तैनात थे। बीबी बच्चे न थे। माली हालत अच्छी थी। अय्याशी से शौक़ था। आख़िर वक़्त पर मुतक़वा हो गए।

डॉ. चतुभुर्ज सहाय= ये पिछले जन्म में एक छोटी ज़ात के आदमी थे। इज्ज़ो-इंक्सार बहुत था। ग़मख़ोर बहुत थे। गुज़र मुश्किल से होता था और वह इस ग़ुरबत को ईश्वर की जानिब से समझते थे। और कोई ग्लान नहीं था। और इसलिए तकलीफ़ भी कम महसूस करते थे। (नक़्शा सामने आ गया)।

डॉक्टर श्रीकिशन उस जन्म में भी डॉक्टर थे। तबियत के सख़्त थे। तवायफ़ से ताल्लुक़ था। उसके मरने पर उनको बहुत सदमा हुआ। उस सदमे ने ईश्वर की याद ताज़ा कर दी और ये आखिर वक़्त तक रही। माली हालत अच्छी थी। अब तुमने उनके बारे में पूछा है तो इस अन्सर (यानी नफ़्सानी मुहब्बत) को ख़त्म कर दो। मगर अभी नहीं। डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय अपने दिल की कमज़ोरी अपने साथ लाये हैं। मदन मोहन

लाल अपने साथ ऐशोइश्रत की परागंदगी ज़रूर साथ लाए हैं मगर उसका असर बदल गया। कुछ मुज़िर नहीं है।

17.7.1944

इस मक़ाम (कुद्स) की तवज्जो मैंने सिवाय तुम्हारे और किसी को नहीं दी। और वो भी ख्वाव में दी थी। कजूंसी का इलज़ाम मुझ पर बेजा है। कोई शख़्स दिल खोल कर मेरे सामने आया ही नहीं। तुम्हारे लिए हुक्मन करना पड़ा और तुमने मुझे मजबूर भी कर दिया। मुझे जो कुछ मालूम था, मैं अपने सीने में ले गया। इसका लेना वाला कोई पैदा ही न हुआ और मुझे आरजू ही रह गई।

सवाल= मुझे तो हजूर बता दें?

फ़रमाया= तुम्हें सब दे दिया। तुम्हें यह ख़्याल रहता है कि इसका लेने वाला कोई पैदा हो। यह असर मेरी तबियत का है। यह असर मेरा है जो तुम में मोज्ज़न रहता है। क्या अजब है कि तुमको भी नाकाम वापस होना पड़े। इसके लेने वाले मादूदे चन्द होंगे। एक शख़्स था (इशारा बिरजू) जिसमें यह बात बहुत अरसे के बाद पैदा की जा सकती थी। मगर उनमें ख़ून मुंशी रघुबर दयाल का बाक़ी है। वो तुम्हारी तरफ़ रूजूअ ही क्यों होने लगे। **श्रीकिशन** इस मुक़ाम पर पहुंच नहीं सकते। **चतुभुर्ज सहाय** की इतनी उम्र नहीं है कि उस वक़्त तक इस हालत को हासिल कर सकें। **मदन मोहन लाल** में यह क़ाबलियत ज़रूर है मगर वह अपने राजाई (Rajaai) हैसियत को नहीं छोड़ते। जब सब जज़बात बुझ जाते हैं तब रसाई हो सकती है। तुम्हारे जज़बात पैदाईशी तौर पर बुझे हुए थे। बासनाऐं साफ़ थीं, मगर पिदरी असर मौजूद था। तड़प तुम्हारी घुट्टी में मौजूद थी। तुममें नज़ाकत बहुत है। इसको छोड़ने की कोशिश करो। छोड़ने से मेरा यह मतलब नहीं है कि उसको ख़ैरबाद कह दो। यह ख़ुदादाद नेमत है। जो हर शख़्स को नसीब नहीं होती। मतलब यह है कि इस पर क़ाबू रखो। निफ़ासत में तकलीफ़ हो जाती है। इसका तुम्हारा खुद तजुर्बा होगा। तुम्हें गन्दे लोगों से साबक़ा पड़ेगा। उस वक़्त उसको deeply consider over न करो बल्कि रफ़्तो गुज़िश्त कर दो। तुम्हारे मिज़ाज में बहुत जल्दी है। लोग इसको बरदाश्त न कर सकेगें। जितना जिसका ज़र्फ़ है उतना ही वो पा सकता है। जल्दी करने में उसकी नसों को नुक़सान पहुंचने का

अंदेशा है। दिमाग की तवज्जो देने में ख़ास एहतियात की ज़रूरत है। फ़ोर्स (Force) वहीं पर देना चाहिए जो मुक़ाम फ़ौरन खोल देना हो।

मुत्ताल्लिक़ा मदन मोहन= वो खूब समझते हैं। नं. 1 एक गुफ़्तगू में ज़रा किसी ने cross किया और ग़ुस्सा आ गया। अगर इस बात को दूर कर लें तो सब बातें दूर हो जावेंगी। ये politics जो खाते वक़्त तकलीफ़ देह साबित होती हैं, यह अख़बार देखने का नुक़्स है। मसलन क़ाज़ी क्यों दुबले; शहर के अदंशे से। आप अख़बार देखते हैं और खूब घोंटते हैं और गालियां देना शुरू कर देते हैं। तन्हा बैठे-बैठे कमरे में गालियां देना शुरू कर देते हैं। कोई हो या न हो। एक नुक़्स और भी है, कि जिस किसी शख़्स की तरफ ख़्याल अच्छा हो जाये उसमें सब ख़ूबियां ही ख़ूबियां देखने लगते हैं। बरख़िलाफ़ इसके, जिस शख़्स से नाखुश हों, उसमें कोई भलाई नज़र नहीं पड़ती। खुशामद पसंदी भी है। ऐसा कोई इंसान नहीं जिसमें कोई बुराई न हो। बुराई देखने की आदत के यह मानी हैं कि वह बुराई उसमें बीज रूप में खुद मौजूद है। जिस पर अक्स पड़ने से दूसरे की बुराई समझ में आती है। उसकी पहचान यह है कि अग़र यह बुराई समझ में आने से दिल को तकलीफ़ होती है तो यह बुराई उस में बीज रूप में मौजूद है। उसको साफ़ करना चाहिए। और अगर दूसरे की बुराई मालूम करके तकलीफ़ नहीं होती तो यह अहसास की ख़ूबी है। जहां उनकी अंदरूनी ख़ूबियां और जगह नहीं मिलेंगी, वहां यह बात भी और जगह नहीं मिलेगी। इस stage के आदमी में ऐसी बातें रह जाना जिसमें सब ख़ूबियां छुप जाऐं, ताज्जुब ख़ेज बात है। उन्होंने अपनी किसी वृत्ति को तेज़ होने से नहीं रोका। शिकायत करना अपना फ़र्ज़ समझा। आगे कुछ सरोकार नहीं। मैंने अपना फ़र्ज़ पूरा करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। उन से पूछो कि उन्होंने क्या फ़र्ज़ अदा किया। जहां बैठे मुझे बदनाम ही किया। मैं समझता हूं कि उनका दिमाग़ किसी हद तक बेक़ाबू है मगर इसकी जिम्मेवारी उन्हीं पर आयाद होती है। उन्होंने इन बातों को कभी ऐब ही नहीं समझा। और मैंने भी मुरव्वत में कुछ नहीं कहा। गुरु की निगाह हमेशा अंदरूनी हालत पर रहती हैं।

हिरासाँ न होवें। रामचन्द्र के कहने पर मैंने यह सब राज़ खोल दिए और उसकी नियत भी नेक थी। तरकीबें मैं अक्सर बताता रहता हूं। अगर मान लो कि यह ऐब दूर न हुआ तो उन्होंने तो अपना काम बना लिया। मगर मेरा काम नहीं बना। ये मेरी ग़रज़ है कि मैं चाहता हूं कि उनमें यह ऐब न रहे। तुम्हारे फूफाजी ने इन बातों पर हमेशा

शाबाशी का हाथ फेरा। अगर तुम चाहो तो यह ऐब उनके क़तई दूर हो सकते हैं। मगर उनको अपने में फ़ना करना होगा। और तुम सिवाय इस काम के और कुछ न कर सकोगे। अगर वह अपनी तबियत में ग्लान पैदा कर लें तब तुम उनको अपनी यानी उनकी जगह से उखेड़ दो। मगर मुश्किल यह है कि वो उनके लिए फिर जगह क़ायम कर देते हैं। अगर तुम उनको अपने में फ़ना करोगे तो चौबीसों घन्टे तुमको उनकी निगहदाश्त करना पड़ेगी। (नक़्शा सामने आ गया) उनसे कहो कि खुद कोशिश करें और अपनी will को काम में लाएँ। इससे भी वही काम हो सकता है। एक बात उनके इख़लाक़ बिगड़ने की यह भी हो गई कि मैं दुनियां से कूच कर गया और उनको खौफ़ जाता रहा। हर ख़लीफ़ा ने ख़ुदराई अख़तियार कर ली है। और यह शिकायत मुझे सबसे है।

सोसाईटी में जब तक कोई Head या सरधरा नहीं होता, यह नुक़्स पड़ जाया करते हैं। हमारे बिरादरे अज़ीज़ को इससे कोई ताल्लुक़ न रहा। न वो सरधरा थे और न इसकी उन्होंने ज़िम्मेदारी समझीं। बल्कि यह तुम्हारी सबकी ग़लती थी कि बिला मेरे हुक्म के उनको सरधरा मान लिया! अब Controlling Agency मौजूद है और उसमें मेरी ही ताक़त काम कर रही है। जिसकी जिम्मेवारी ज़्यादा होती है उसके इख़ल्यारात भी बहुत होते हैं। तुम्हारा कहना मेरे लिए आयत व हदीस होगा। जो शख़्स तुमसे रूजूअ नहीं होगा उसका रूहानी चश्मा बंद हो जायेगा। और यह ख़ता उसी शख़्स की होगी। और ज़ाहिर है कि जब सरचश्मे से ताल्लुक नहीं रखा तो उस दरिया के ख़ुश्क हो जाने का एहतमाल है। दिलाराम का अगर चाहो तो connection break कर सकते हो। और उन हज़रते शरीफ़ (नन्हे) से connection क़ायम कर सकते हो। उस वक़्त उनको मज़ा मालूम हो जाए।

18.7.1944

नफ़सानी ख़्वाहिशात का मजमुआ **नाफ़** में रहता है। जब ज़रूरत हुई खींच कर नीचे उतार दिया और जब चाहा फिर खींच लिया। अगर कुछ गिज़ाईयत के असर से कुछ ज़्यादती हो जाये तो नाफ़ से उसको Evaporate कर दिया। मगर यह बात आम लोगों के बतलाने की नहीं है और न करने की। इसलिए कि मज़े में आ कर इस ताक़त को ज़्यादा न घसीट लें जो सम्भलना मुश्किल पड़ जावे। बहुत क़ाबू तलब आदमी यह

कर सकता है। तुमको मैंने इसलिए बतलाई है कि तुमने इसको क़रीब-क़रीब ख़त्म कर दिया है इसमें अंदाज़ की बहुत ज़रूरत है; कि ज़रूरत से ज़्यादा न खिंच आवे। इसलिए यह बात मैं ख़ास-ख़ास हस्तियों के लिए बताता हूं। हमारे यहां इस मुक़ाम पर ख़ास ज़ोर इसलिए नहीं दिया जाता है कि कहीं यह ताक़त न अभर आवे। इस मुक़ाम को बेहतर तरीक़े में वो खोल सकता है जिसको इस ताक़त का पूरा मलका हो गया हो; और मुक़ाम काफ़ी साफ़ हो चुका हो। कुतुब इसलिए क़ाबले तर्जीह है कि उसको इस मुक़ाम का मलका हो जाता है। मगर उसके ये मानी नहीं कि वो एहतियात न रखे। डॉक्टर श्रीकिशन के इस मुक़ाम की ज़्यादा सफ़ाई की ज़रूरत है। वो इस असर को अपने साथ लाए हैं। मैंने उनको इस तरीक़े से तालीम दी कि वो मुझसे चिपके रहें, और उसके उभरने का मौक़ा न मिले। यह मेरी तालीम की ख़ूबी है कि उनको इस क़दर मोहब्बत पैदा हो गई। इसकी वजह मैं ऊपर कह चुका हूं। इस बात का नाज़ उनको बेजा है। उनमें जाहिरा क़ाबलियत इसकी न थी। मोहब्बत का अंकुर उनमें मौजूद ज़रूर था मगर उसकी शक्ल तब्दील करना मेरा ही काम था। डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय ज़्यादा साफ़ आए। इसके ये मानी नहीं हैं कि वो इससे बरी थे। मदन मोहन लाल को ताकीद कर दो कि किसी को बतलाऐं नहीं।

अगर किसी शख़्स की बुराई देख कर उसकी तकलीफ़ अपने को अरसे तक रहे तो गोया वो बुराई बीज रूप में अपने में मौजूद है। अगर थोड़ी देर मालूम हो कर जाती रहे तो वो लगाव की वजह से है।

मुताल्लिक़ा **मदन मोहन लाल=** अगर ग़लती कोई सरज़द हो जाए तो उससे माफ़ी मांगें। असनाए गुफ़्तगू में मेरी ख़ास मुराद है। जितने ही दिल से और आबदीदा होकर माफ़ी मांगेंगे, उतनी ही वो ताक़त कमज़ोर होती जायेगी। मगर मुश्किल यह है कि उनको अहसास ही नहीं होता कि यह बात मुझको कहना न चाहिए थी। वो हर बात को हक़ समझे हुए है। ख़्याल उनका यही होता है कि मैंने ठीक कहा। **पहचान=** जिससे दूसरे को तकलीफ़ पहुंचे या उसका चेहरा बदलने लगे; समझ लें यह बात उसको नागवार हुई है। अपनी पिछली बातों को सोचें और जो बात याद आ जाए उस पर पश्चाताप करें और ऊपर की हिदायत पर अमल करें। हक़ बजानिब सिवाय ख़ुदा के कोई नहीं होता। इस पर ज़ोअम करना बेकार है। जब उसकी कृपा होती है तब इंसान

में यह बात पैदा होती है। गोया उसकी इब्तदा वो (खुदा) है। फिर फ़ख़्र क्या? अगर इंसान दुनिया में रह कर उसको नाखुशगवार बना ले तो मैं समझता हूं कि उससे ज़्यादा कोई कम-नसीब नहीं। असल मतलब यह है कि इंसान हर वक़्त खुदा से रूजूअ नहीं रह सकता; इसलिए उसके दिल बहलाने के लिए यह सब साज़ो-सामान, अच्छाई-बुराई जमा कर दीं गईं हैं। अगर ग़ौर से सोचा जाऐ तो उनकी असल कुछ नहीं। मुतज़ाद चीज़ों में फ़रहत दिमाग़ी होती है। अच्छाई और बुराई ये दोनों ज़िदें हैं। अच्छाई का पता उस वक़्त चल सकता है कि जब उसके मुक़ाबिल में बुराई रखी जावे। इसी तरह से बुराई का अंदाज़ उस वक़्त हो सकता है जबकि उसके मुक़ाबिल में अच्छाई हो। अब ज़रा ग़ौर कीजिए कि उनकी बुनियाद क्या हुई। यह सब तफ़रीह के सामान हैं जो क़ुदरत ने इंसान के दिल बहलाव के लिए जमा किए हैं। जिसने ऐसा समझा उसका बेड़ा पार हो गया (नक़्शा सामने आ गया) कि एक चीज़ में से दो धारें (अच्छाई-बुराई) निकल रही हैं। उनको लौट देने से दोनों अपना असर खो देती हैं। (नक़्शा दिखलाया) भंडार से एक धार यादे-खुदा की निकल रही है और एक नफ़्स की निक़ल रही है। उलट देने से दोनों की इब्तदा एक हो जाती है (नक़्शा)

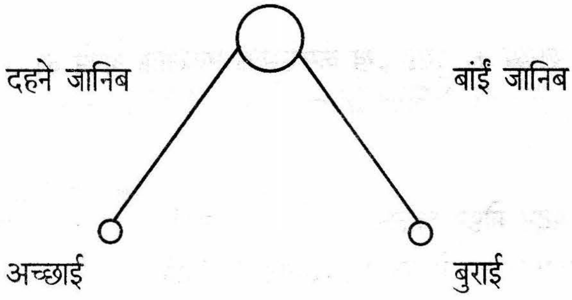

(यादे खुदा) (नफ़्स)

जिस वक़्त आदमी यादे-खुदा में मसरूफ़ होता है और वह धार जिसको मैंने तुम्हारे समझाने के लिये यादे-खुदा से निस्बत दी है; असल तक उलट कर पहुंच जाती हैं तो फिर यही असर उस धार द्वारा जिसको मैंने नफ़्स की धार बतलाई है उस में उतरना शुरू होती है। इससे नफ़्स शुद्ध हो जाता है और उसमें चड़क-भड़क और तेज़ी

जाती रहती है। इसलिए हमारे यहां नफ़्स सबसे आख़िर में मुकम्मिल होता है। और हर जगह यही उसूल है। अपने यहां ख़ुसूसन **बिरजू** ने बहुत सी तरकीबें लोगों पर Impression जमाने के लिए बतलाई हैं। वो सब उनकी **मनधडंत** है। उन पर अमल न करना चाहिए। बात वही सही है जो मैं तुमको बतला रहा हूं और बतलाता रहूंगा। या जिस किसी ने अपने पीर से हमआहंगी हासिल कर ली है कि उसकी वजह से उसको ऊपर से रोशनी मिलने लगी है, उसके बतलाए हुए नुसख़े सही होंगे। मन धडंत बातों पर अमल करने से मन का असर ज़ायल न होगा। **एक आम बात** हो रही है कि जब किसी ने कोई बात कही या कोई हाल कहा उसको फौरन कोई न कोई तरकीब सहूलियत की बतला दी गई। तरकीबों से मेरा मतलब अमल और शग़ल से है। ये बातें और तरकीबें जो असल भंडार से नहीं आई हैं, सही नहीं हो सकतीं। ये दूसरी बात है कि धोखाधड़ी तीर लग जाए। लोग अपनी अहमियत जताने और Impression जमाने के लिये बतला दिया करते हैं। **बड़े फूंक-फूंक कर क़दम रखने की ज़रूरत है। रूहानियत बच्चों का खेल नहीं है।** अब सोचो तो सही कि **मैं मरा हुआ** हूं, तुम्हारी याद-दाश्त क्लोरोफ़ार्म के असर ने ख़राब कर दी। लिहाज़ा उसका बदल लीमूँ (Lemon) है। भंडारे में अगर कोई बात पड़ जाए तो उन लोगों से अलैहदगी हासिल करके मुझसे एकांत में पूछ लेना। **बाबू ब्रजमोहन लाल** को अपनी तरकीबों पर नाज़ है। **डॉक्टर चतुभुर्ज सहाय** को तुम्हारी सोहबत की सख़्त ज़रूरत है। उनकी **Activity** खींची भी गई है। **त्याग** तुमने ही किया। कि किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं होती। यह असल त्याग है (नक़्शा सामने आ गया)। वो इस तरह पर कि जैसे कोई ज़िन्दा चीज़ें अपनी जगह पर रखी होवें और वो आधा-सीसी होवें और उनमें हरकत करने की ताक़त मादूम हो चुकी होवे। यह असल **त्याग** की तारीफ़ है। इस क़िस्म का त्याग सबसे पैदा नहीं होता मगर उसके यह माने भी नहीं है कि वह कोशिश करना छोड़ दे। तुममें यह बात छुटपने से है। **चित्त की वृत्ति निरोध** हो जाने की यही कैफ़ियत है।

मैंने डॉक्टर श्रीकिशन के हालाते मोहब्बत बतलाऐ हैं। वह इसलिए बतलाऐ हैं कि तुम उनके इस बात के बारे-अहसान न हो कि उन्होंने मुझसे मोहब्बत की है।

GLOSSARY

शब्द		अर्थ
आलमे–सुग़रा	=	पिण्ड देश (Organic region)
आलमे–कुबरा	=	ब्रह्माण्ड मण्डल (Cosmic region)
आलमे–उलिया	=	पारब्रह्माण्ड मण्डल (Para-Cosmic region)
आलमे–क़ुद्सा	=	सत–पद मण्डल (Region of piety)
असल ज़ात	=	Ultimate (Real) Being
अनाहत (या हृदय चक्र)	=	हृदय स्थान में स्थित है। सूफ़ी मत में इसी को लतीफ़ा–ए–क़ल्ब कहते हैं। (वायु का मण्डल)
आज्ञा चक्र	=	यह भ्रू–मध्य अर्थात दोनों भौंहों के बीच स्थित है। सूफ़ी मत में इसको नुक़्ताए सुवैदा कहते हैं।
आख़िरत	=	परलोक
असहाब	=	दोस्त का बहु वचन, दोस्तों, साथियों
अफ़ज़ल	=	श्रेष्ठ
अयानत	=	सहायता
अज़ाब	=	प्रकोप
आबिद	=	इबादत (पूजा) करने वाला
अख़लाक	=	चरित्र, श्रेष्ठ कर्म व व्यवहार
अताब (या इताब)	=	प्रकोप
आक़िल	=	बुद्धिमान, मेधावी
अहवाल	=	परिस्थितियां
असबाब	=	सामान
आरयतन	=	थोड़े समय के लिये, अस्थाई तौर पर
आरिफ़	=	ब्रह्म ज्ञानी
आतिश परस्त	=	अग्नि पूजक
आक़िबत	=	अन्त, परलोक
अन्दोह	=	रंज

औलिया	=	सन्त
अहल	=	अधिकारी
अज़ीज़	=	प्रिय, प्यारा (Dear)
अहतियात	=	समझकर चलना, होशियारी बरतना, चौकसी, बचना (Careful)
आलमे–अरवाह	=	पितृ लोक, रूहों की दुनिया
अदम	=	(Non-existance) ना होना
अदम वाक़फ़ियत	=	ना–जानकारी
आसूदगी	=	शान्ति (Satisfaction)
आमालनामा (या एमालनामा)	=	कर्म पत्र
आफ़ताब	=	सूर्य, सूरज, शम्स, मेहर
अल्हाद	=	नास्तिकता
अनानियत	=	खुदी (Selfhood)
अनवार	=	नूर का बहु वचन, रोशनियां
आज़ाय लतीफ़ा	=	सूक्ष्म इन्द्रियाँ
आजिज़	=	गरीब, कमज़ोर, बेबस, मजबुर, लाचार, (Humble), मायुस, नाउम्मीद
अब्दाल	=	वह सत्तर आदमी जिन के वजूद से दुनिया मानी गई है। इन में से चालीस मुल्क श्याम (Syria) में हैं और तीस दूसरी जगहों में। जब इनमें से कोई शख्स मरता है तो दूसरा उस की जगह क़ायम हो जाता है, इसलिए अब्दाल कहलाते हैं।
इब्द	=	Humility
इस्तक़ामत	=	दृढ़ता
इश्क़–हक़ीक़ी	=	ईश्वर से प्रेम
इश्क़–मजाज़ी	=	दुनियावी प्रेम
इबादत	=	उपासना
इन्तक़ाल	=	मृत्यु

ईमान	=	उन बातों को मानना और स्वीकार करना जिन्हें मानने की शिक्षा धर्म–शास्त्र ने दी है।
इल्म	=	विद्या
इताअत	=	आज्ञा पालन
इशारतन	=	संकेत रूप में
इन्कसारी	=	विनम्रता
इर्शादात	=	उपदेशों
ईज़ा रसानी	=	कष्ट देना
इत्तफ़ाक़	=	संयोग, सहमति
इलाह	=	पूज्य
इस्लाह	=	सुधार
इल्हाम	=	दैवी प्रेरणा
इल्म–बातिन	=	अध्यात्म विद्या
इज्ज़ व नियाज़	=	नम्रता और प्रार्थना (आरज़ू)
इबादत ख़ाना	=	आराधना गृह, पूजा घर
इख़्लास	=	सच्चा और निष्कपट प्रेम
इन्तिहा	=	पराकाष्ठा
इन्शा अल्लाह	=	अगर परमात्मा ने चाहा तो (God willing)
इस्तलाह	=	परिभाषा
इस्तलाही, इस्तालाहन्	=	पारिभाषिक
इस्तलाहात	=	Techniques
इस्तग़ना	=	बेपरवाही, लापरवाही
इस्तक़लाल	=	मज़बूती, दृढ़ निश्चय
इबरत	=	सबक़
इनकिशाफ़	=	खुलना, ज़ाहिर होना
इख़्त्यारात	=	अधिकार

इजाज़त–शर्तिया (1)	=	Conditional permission (for training)
इजाज़त–तरीक़त, इजाज़त–तालीम } (2)	=	प्रशिक्षण देने की इजाज़त (Permission for training, Preceptorship)
इजाज़त–ताअम्मा (3)	=	मुकम्मिल इजाज़त (Full permission for training)
उलूम	=	विद्यायें
उज़्र	=	आपत्ति
उखुव्वत	=	भाईचारा
उल्मा	=	विद्वान लोग
उम्मीद अफ़ज़ा	=	आशा वर्धक
उन्स	=	लगाव, प्रेम, सतसंग
उक़्बा	=	परलोक, आख़िरत, आक़बत
चुग़द	=	बेवकूफ़, उल्लू की एक क़िस्म

(1) पूज्य लाला जी साहब के समय में "इजाज़त शर्तिया" उस अभ्यासी को देते थे जिस की रसाई " आज्ञा चक्र" तक हो जाती थी। यह एक प्रकार की मॉनीटर (Monitor) पद्वी थी। एसे अभ्यासी का कर्तव्य गुरू की आज्ञा द्वारा सतसंग करना और कराना तथा सतसंगियों को अनुशासन में रखना होता था।

(2) जब साधक " त्रिकुटी " के स्थान तक रसाई हासिल कर लेता था तो उसे "इजाज़त तालीम" दे देते थे। ऐसा साधक जहां तक उसकी रसाई है, वहां तक तालीम दे सकता था।

(3) " इजाज़त ताअम्मा" यानी सम्पूर्ण इजाज़त (आचार्य पद) उस को देते थे जो गुरू का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी या ख़लीफ़ा होता था।

पूज्य बाबू जी महाराज ने भी साधकों के प्रशिक्षण के लिये तीन प्रकार की इजाज़तें दी हैं जिन की हैसियत मॉनीटर की ही है। Organiser; Prefect (जिन को प्रशिक्षण की Provisional Permission दी गई है) तथा Preceptor (जिन को Full Premission दी गई है)। इन के बारे में ज़्यादा विस्तार से लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन के बारे में सहज मार्ग के अभ्यासी भली भाँति परिचित हैं।

एत्क़ाद = विश्वास (Faith)
एतराज़ = आपत्ति
एतदाल = सम अवस्था (Balanced State)

याद्—दाश्त = रोज़नामचा, डायरी, अनुस्मारक, स्मरण शक्ति
यकसूई = एकाग्रचित्त, तन्मयता, संलग्नता

कुत्ब = ध्रुव (Pole star)
कुत्बुल अक़्ताब = ध्रुवाधिपति
क़ल्ब = ह्रदय, दिल
कण्ठ चक्र = कण्ठ (टेटूएं) में स्थित है। (आकाश मण्डल)
कुफ़्र = उन सच्चाइयों को मानने और स्वीकार करने से इन्कार करना जिन की शिक्षा इस्लाम ने दी है।
क़ुर्ब, क़ुर्बत = सान्निध्य, सामिप्य
करम फ़रमाना = कृपा करना
कलाम = कथन
काफ़िर = नास्तिक, मूर्ति पूजक
क़यामत = प्रलय
क़राबत = नातेदारी
क़सदन = जान बूझ कर
कफ़ील = ज़िम्मेदार
किफ़ायत = सन्तोष, कमी
कफ़्फ़ारा करना = प्रयश्चित करना
क़िब्ला = रूत्बा, काबा शरीफ़
क़िब्ला हज़रत = गुरू महाराज
किब्रिया, कबीर = महान, बड़ा
क़ब्ज़ = Constipation, रूहानियत में क़ब्ज़ उस हालत को कहते हैं जिसमें उपासना, पूजादि में मन नहीं लगता और जी उचाट सा रहता है।

किरामिन कातबीन	=	अच्छे बुरे कर्मों को लिखने वाले फ़रिश्ते।
कैफ़ियत	=	ब्योरेवार हाल, मस्ती का नशा
क़ायम मुक़ाम	=	जॉनशीन (Representative)
कसब	=	परिश्रम, हिम्मत
कसबी	=	स्वयं के परिश्रम व प्रयत्न से आध्यात्मिक प्रगति करना
कशफ़ी	=	Subtle, सद्गुरू की आत्मिक शक्ति के द्वारा प्रगति करना।
कसीफ़	=	Gross, मैला, गंदा, अपवित्र, नापाक
कसाफ़त	=	Grossness, अपवित्रता, नापाकी, गंदगी
क़ब्ल	=	पहले
कुव्वते मुत्ख़ैला (मुतख्ययला)	=	इच्छा शक्ति, विचार शक्ति
कुव्वते हाफ़िज़ा	=	स्मरण शक्ति
कुव्वते वहमिया	=	मनन शक्ति
कुव्वते ज़हानिया	=	बुद्धि शक्ति, दिमाग़ी ताक़त
कुव्वते मुदरिक़ा	=	सोचने की शक्ति
कुव्वते बरदाश्त	=	सहन शक्ति
कुव्वते क़बूल	=	ग्रहण शक्ति
कुव्वते ममीज़ा	=	Conscience
कशफ़	=	अन्दरूनी हालत का खुलना, ज़ाहिर होना, आत्म शक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान।
क़ुवाय मुदरिक़ा महसूसा	=	ज्ञान इन्द्रियां
क़ादिरे–मुतलक़	=	सर्व शक्तिमान

ख़ुदी	=	अहंकार (Self)
ख़ुतबः	=	धार्मिक उपदेश
ख़ता	=	त्रुटि
ख़ुश ख़ुल्क़ी	=	अच्छा अख़लाक़, अच्छा आचरण
ख़श्मगीं	=	क्रोधातुर
ख़्वाहिश	=	इच्छा
ख़सलत	=	स्वभाव, विशेषता

ख़साइल	=	अच्छे स्वभाव के गुण
ख़लीफ़ा	=	उत्तराधिकारी
ख़ुश ख़ुल्क़	=	सदाचारी
ख़ुदनुमा	=	अहंकारी
ख़ुदनुमाई	=	अहंकार
ख़िलअत	=	उपहार
ख़ानक़ाह	=	आश्रम, मठ (Monastery)
ख़िरका	=	शरीर से उतरा हुआ वस्त्र
ख़ुलूस–क़ल्ब (से)	=	सच्चे दिल (से)
ख़यालात	=	विचार (Thoughts)
ख़ाल–ख़ाल	=	कोई–कोई, इक्का–दुक्का (A few)
ख़िलाफ़–अदब	=	आचरण के विरूद्ध
ख़वारिक़	=	वह आचार–व्यवहार जो दूसरे व्यक्तियों के लिये आश्चर्यजनक हों।
ख़ादिम	=	सेवक
ख़ल्क़	=	दुनिया
ख़िल्वत–हैवानी	=	काम शक्ति या काम वासना
ग़ौस	=	पार्षद्
ग़ौसुलआज़म	=	महा पार्षद्
ग़ीबत	=	ईर्ष्या, चुग़ली, आलोचना
ग़ालिबन	=	अनुमानतः
ग़ैरदानिस्ता (ना दानिस्ता)	=	अनजाने में (Unconsciously)
ग़लबात नफ़सानी	=	काम शक्ति या काम वासना
ग़लबा	=	प्रभाव
गोशा नशीनी	=	एकान्त वास, अकेला रहना
ग़ल्ताँ व पेचाँ	=	परेशान, उधेड़ बुन में, गिरना पड़ना
ज़ात	=	Being
ज़िक्र	=	नाम जाप
ज़ाकिर	=	जागृत

ज़हूर	=	प्रकटीकरण
जन्नत (बहिश्त)	=	स्वर्ग
ज़ामिन	=	ज़मानत करने वाला (Witness, Surety)
ज़ुहद	=	परहेज़गारी, संयमित जीवन
जाहिल	=	असभ्य
ज़कात	=	वह निश्चित धन जिस का अपनी कमाई और अपने माल में से निकालना और अल्लाह के बताये हुये शुभ कार्यों में ख़र्च करना आवश्यक होता है।
ज़ियारत करना	=	दर्शन करना
ज़िन्दीक	=	नास्तिक
जज़्बा	=	प्रेमावेश, खिंचाव, कशिश, वासना
ज़र्रा (ज़र्रात)	=	कण
ज़िक्रोफ़िक्र	=	जाप और ध्यान, सूमिरन और मनन
जाज़िबे–हक़ीक़ी	=	परमात्मा
जौहर	=	निचोड़ (Essence)
ज़िल्ले–आतफ़त (साया–ए–आतफ़त)	=	कृपा की छाया
ज़मानाये हजाब	=	समाधी
ज़वाल	=	गिरावट (Down fall)
ज़ाहिद	=	संयमी, परहेज़गार, तपस्या करने वाला
ज़बाँ–ज़द–ख़यालक़	=	हर शख़्स की ज़बान पर
पीर	=	गुरू, (Master, Guide)
पाकीज़गी	=	सफ़ाई, पवित्रता
पनाह	=	संरक्षण
पैरहन	=	वस्त्र
पैरवी करना	=	अनुकरण करना
पीरी मुरीदी	=	गुरू–शिष्यपना
पीराने उज्ज़ाम	=	अपने वंश के परम संत, सदगुरू
पोशिश	=	पहनावा
पसारा	=	फैलाव

फ़ैज़याब	=	लाभान्वित
फ़ना होना	=	लय होना, मृत्यु होना
फ़नाफिश्शेख़	=	सद्गुरू के अस्तित्व में अपना अस्तित्व लय होना।
फ़नाफ़िलरशुल	=	अवतार में लय होना
फ़नाफ़िल्लाह	=	ईश्वर के अस्तित्व में अपना अस्तित्व लय होना।
फ़ज़ीलत	=	अच्छाई
फ़ैज़	=	कृपा (Grace)
फ़रमाँबदारी	=	आज्ञापालन (Obedience)
फ़ेल	=	कर्म
फ़ितरत	=	प्रकृति (Nature)
फ़िक्र	=	ध्यान (Meditation, Contemplation) परवाह करना, मनन
फ़नाइयतें	=	लय अवस्थायें
फ़रायज़(बहुवचन फ़र्ज़ का)	=	कर्तव्य (Duties)
फ़ज़्ल	=	करम, कृपा
फ़रीज़ा	=	कर्तव्य
फ़नाए–फ़ना	=	तुरिया अवस्था (Death of death)
फ़ितरती	=	प्राकृतिक, शरारती, चालाक
बर–अक्स	=	इस के उलट (On the contrary)
बुत	=	मूर्ती (Idol)
बराहे रास्त	=	Directly
बक़ा(बक़ा–इलबक़ा)	=	दायमी ज़िन्दगी (Perpetual life), असमप्रज्ञात समाधि, जीवन मुक्त दशा, तुरयातीत अवस्था
बुतकदा	=	मन्दिर
बाइस	=	कारण
बाहम	=	आपस में
बदगुमानी	=	किसी के प्रति दिल में बुरे विचार लाना

बुर्दबारी = सहन शीलता
बख़ील = कंजूस
बद निगाह = बुरी दृष्टि
बीना = देखने वाला
बीनाई = आँखों की रोशनी
बैअत करना = दीक्षा लेना, मुरीद हो जाना, सिलसिले में क़बूल करना, अपने आप को बेच देना, ("बै" का अर्थ है "बिकना") बैअत मानी बिका हुआ। Initiate करना।
बातिल = झूट
बेनज़ीर = अद्वितीय
बातिनी = आत्मिक, आन्रिक, अन्दरूनी,
बद–ख़ुल्क़ = दुराचारी
बेदीन = अधर्मी
बेनियाज़ = बेपरवाह, निस्पृह
बद बख़्ती = दुर्भाग्य
बेइल्म = अज्ञानी
बुर्जुगान–सल्फ़ = पूर्व महापुरूष, गुरूजन
बुर्जुगाने सिलसिला = वंश के महापुरूष
बशारत = ख़ुशख़बरी
बेग़रज़ = निस्वार्थ
बरजख = बीच का मुक़ाम (Buffer), दरमियानी चीज़, जो एक चीज़ को दूसरे के साथ जोड़ देने का जरिया हो।
बहबूदी = भलाई
बशर = आदमी, इन्सान
बश़रियत = आदमियत, इन्सानियत
बफ़ज़्लेहु, बफ़ज़्ले ख़ुदावन्दी = ईश्वर की कृपा से
बे–एतनाई = बे परवाही
ब–तुफ़ैल पीराने उज्ज़ाम = महापुरूषों (गुरूजनों) की कृपा से

मज़्ज़ूबियत	=	Absorbance beyond selfhood
मुताबअत	=	पैरवी, अनुकरण, फ़रमाँबरदारी
मुरीद	=	शिष्य, मुर्दा, यानी वह चेला जो गुरू में फ़ना हो गया हो।
मुराद	=	वह शिष्य जिसमें गुरू लय हो जाता है। आशय
मूलाधार चक्र	=	Anal Plexus, सुषुमना नाड़ी में गुदा और लिंग के बीच स्थित है। (पृथ्वी का मण्डल)
मणिपुरक चक्र	=	नाभिचक्र (नाभि के स्थान में स्थित है। (अग्नि का मण्ड़ल)
मराक़बा	=	ध्यान
मुतकब्बिर	=	अहंकारी
मुब्तदी	=	आरम्भिक स्थिति वाला सालिक, नौसिखिया
मुन्तही	=	अन्तिम मुक़ाम को पहुँचा हुआ सालिक (साधक)
मोजिज़ा	=	चमत्कार (Miracle)
मेराज	=	परम ब्रह्म लोक का आरोहण
मशग़ूल	=	व्यस्त (ध्यान में)
मुख़्तसरन्	=	संक्षेप में
मिस्कीन	=	ग़रीब, Humble
माबूद	=	आराध्य
माबूदियत	=	ईश्वर की आराधना
मक़सूद	=	उददेश्य
मग़फ़रत	=	मुक्ति
मक़सद	=	लक्ष्य, उद्देश्य
मुआफ़क़त	=	मित्रता, दोस्ती
मोहतमिम	=	संचालक, प्रबन्धक
मुस्तहकम	=	दृढ़, चिरस्थायी
मुख़्तसर	=	छोटा, Brief
मोहताज	=	निर्धन, आश्रित
मुज्तबा	=	प्रतिष्ठित
मासिवा	=	के अलावा
मौक़ूफ़ करना	=	स्थगित करना

मुशाहिदा करना = देखना
मशविरा = परामर्श
माज़िरत (या मुआज़िरत) = उज़्र, विवशता (Excuse)
मख़लुक़ = श्रष्टि
मोमिन = ईश्वर भक्त, मुसलमान
मजूसी दीन = अग्नि पूजकों का धर्म
मुरव्वत = शील संकोच
मक़बूल हुये = ईश्वर को प्यारे हुये
मुजाहिदा = हठयोग, जद्दो जहद, दूसरे मानी में, हम जो खुद नहीं हैं, वह मुहब्बत और जद्दो जहद करके बनना चाहते हैं। यानी रूहानियत का अनुभव, रियाज़त और मेहनत में हासिल करना।
मसलक = चलन, पथ, पन्थ
मारिफ़त = ब्रह्म ज्ञान, पहचानना
मतलूब = इच्छित
मश्कूर करना = कृतार्थ करना
मुरक़्क़ा = फ़कीरों की गुदड़ी
मलायक = फ़रिश्ते (बहुवचन मलिक का)
मलिकुलमौत = यमराज (मौत का फ़रिश्ता)
मुन्कर व नकीर = वह फ़रिश्ते जो मरने वालों से उनकी कब्र में उनसे अच्छे बुरे कर्मों के बारे में सवाल करते हैं।
मुर्शिद = गुरू, पीर
मसरूफ़ = व्यस्त
मग़लूब होकर = क़ाबू में आकर, दब कर
माशा अल्लाह = खुदा न करे (God forbidding)
मुदम्मिग़ = घमण्डी, अहंकारी
मरतब = Status
मुज़ाहिरा = दृष्य
मुशाहिदात = बहुवचन " मुशाहिदा" का, आंखों देखी। जब सालिक अपने दिल के परदों को चाक कर

के, अपने अन्तःकरण में बातिनी और अन्दरूनी नज़ारों को देखता है, उसे मुशाहिदा कहते हैं (यानी: अनुभव) ऐसे अनुभव करने वाले को "शाहिद" कहते हैं (साक्षी) और उसकी गवाही (साक्षीपन) को " शहादत" और जो शख़्स शहादत यानी गवाही को क़बूल करे उसे "शहीद" कहते हैं।

मुर्बरा	=	पाक, साफ, बेऐब (Free)
मंज़िलत	=	तारीफ़ (Appreciation)
मुतनफ़्फ़िर	=	घृणा करना
मुआवज़ा	=	बदला
मसबत (या इस्बात)	=	Positive, सकारात्मक
मनफ़ी	=	Negative, नकारात्मक
मुमानियत	=	मनाही
मश्शाक़ी	=	अभ्यास
मुतआद्दिद	=	एक से अधिक, कई
मुन्तज़िर	=	प्रतिक्षा में
मुन्तशिर	=	बिखरे हुए, परेशान
महताब या माहताब	=	चाँद, क़मर, माह, चन्द्र
मजाज़ी	=	दुनियावी, नक़ली, ज़ाहिर
मुहाफ़िज़	=	रक्षक
मकाशफ़ात	=	अनुभव (रूहानी) हालतों का खुलना
मुअत्तर	=	तर होना
मामूल	=	अभ्यास, अभ्यासी
मुज़हिरात	=	अभ्यास
मुर्शरफ़	=	उन्नत्ति
मिलकियत	=	मालिक होना (Ownership)
मौज के ताबे रहना	=	ईश्वर की इच्छा में रहना
मजमूआ	=	समूह
मरकज़	=	केन्द्र
मज्ज़ूब फ़क़ीर	=	अवधूत

मख़दुम	=	स्वामी
मुतवज्जह	=	ध्यान देना (Attentive)
मोतदिल हालत	=	सम–अवस्था
मूरिदे–इताब	=	वह शख़्स जिस पर क्रोध किया जाय (liable for punishment) गुस्से का निशाना बनाना
मुज़ावलत	=	अभ्यास, किसी कार्य को हमेशा करना, रोज़ाना का अभ्यास
मुचैटा	=	Confrontation, Comparison, विरोध, आमना– सामना, मुख़ालफ़त, बहस, तकरार, बराबरी, ज़िद्द, इख़्तलाफ़
मुस्तैहक़ीन (बहुवचन मुस्तहिक़ का)	=	हक़दार, दावेदार

सख़ी	=	दानी
सख़ावत	=	दानशीलता
सब्र	=	धैर्य (Patience)
साबिर	=	सब्र करने वाला
शाकिर	=	ख़ुदा का शुक्रिया अदा करने वाला
सवाब	=	पुण्य
सिजदा	=	ईश्वर के लिए सिर झुकाना
सिद्क़ दिल से	=	सच्चे दिल से
साहिबे करामात	=	चमत्कारों वाला
सादिक़	=	सत्यवादी, सच्चा
शिकस्तगी	=	जीर्ण शीर्ण अवस्था
शफ़क़त	=	दया
सज्जादा	=	नमाज़ पढ़ने का बिछौना
सआदत	=	सौभाग्य
सरायत करना	=	घुस जाना
साहिबे दिल	=	दिल वाले, ईश्वर भक्त
शाहिद	=	साक्षी, गवाह
शरह	=	व्याख्या
शग़्ले नसीरा	=	नासाग्र ध्यान

शग़ले महमूदा	=	त्रिकुटी ध्यान या भृकुटी ध्यान
शीरीनी	=	मिठास
शीरीं–दहनी	=	मीठी ज़बान, मीठा बोलना, मृदुभाषी
साकिन	=	स्थिर, रहने का मुक़ाम
शहवात–नफ़सानिया	=	काम वासना या काम शक्ति
सरापा	=	सिर से पाँव तक
साया–ए–आतफ़त	=	कृपा की छाया
सोहबते मौला	=	उपासना, गुरू का सामिप्य
सिफ़्ते जब्बारी	=	रौद्र रूप
सलूक	=	अच्छा व्यवहार (Moral behaviour)
सलक	=	पथ, पन्थ, रास्ता
सालिक (अहले–सलक)	=	पन्थाई, राह चलने वाला, साधक
सज्जादा नशीन	=	उत्तराधिकारी, Successor Representative
सतपद्	=	Level of Righteousness
स्वाधिष्ठान चक्र	=	लिंग के मूल में स्थित है (जल का मण्डल) करीब ही कुण्डिलिनी का स्थान है।
सहस्रार चक्र (सहस्रदल कमल या शुन्यचक्र)	=	Thousand petalled lotus, यह मस्तक के ठीक ब्रह्मरन्ध्र के ऊपर स्थित है।
सोहबत	=	सतसंग
सिफ़्त	=	गुण, Attributes
सदक़ा	=	दान पुण्य
सलब करना	=	छीन लेना
शग़ल	=	ध्यान, मराक़बा
शाग़िल	=	ध्यान करने वाला, अभ्यस्त
शरीयत	=	इस्लामी धर्म शाष्त्रों की पाबन्दी, कर्म काण्ड
शग़ले राब्ता (या तसव्वुरे शेख)	=	गुरू की शक्ल पर ध्यान
शिज्रः	=	वंशावली, Geneological tree
शिरकत	=	हिस्सेदारी
शुक्रगुज़ार	=	कृतज्ञ
शफ़ाअत	=	ईश्वर से अपने अनुयायिओं के लिए सिफ़ारिश
सुकून	=	शान्ति

सुकूत = खामोशी
शरफ़ (या शर्फ़) = सम्मान
शाज़ोनादिर = यदा कदा, कभी कभी
शगूफ़ा = कली, बिन खिला फूल, अजीब, अनोखी बात
सैफ़–हाय (बहुवचन "सैफ़" का) = तलवारें, Swords
सादा–लूही = भोलापन, सीधापन, Simple Mindedness

रूत्बा = Status
राहे रास्त = सीधे रास्ते, सच्चाई के रास्तें
रूजूअ होना = झुकना, मुखातिब होना, to get oriented, to incline
रूहानी मुक़ाम = आध्यात्मिक स्थिती
रास्तगो = सच बोलने वाला
रास्तगुफ़्तारी = सच बोलना
रग़बत = लगाव, Attachment
रियाज़त = जप तप आदि के अभ्यास, तप, तपस्या, Practice
रिया = मक्कारी
रिक़्क़त तारी होना = रोना आ जाना
रिवायत = कहावत
रहज़न = लुटेरे
रहबर या राहबर = राह दिखाने वाला, Guide
राहरौ = रास्ता चलने वाला, साधक, सालिक
राज़ी ब रज़ा = जिस हाल में ईश्वर रखे, उसी में खुश रहना
राग़िब = इच्छुक, Inclined

तास्सुब = दुशमनी
तवज्जोह = प्राणाहुति, शक्तिपात, सुरत, Transmission, Attention
तौफ़ीक़ = सामर्थ्य
तवाफ़ करना = परिक्रमा करना

तोशा	=	सामान
तवक्कुल	=	पुरा भरोसा
तबर्रूक	=	प्रसाद
तबर्रूकन्	=	प्रसाद रूप में
ताबीर (ख़्वाब की)	=	स्वप्न फल
तफ़रीक़	=	प्रथकता
तरीक़त	=	आध्यात्म, सत्संग, अभ्यास, रास्ता, पथ
तालिब	=	इच्छुक
तसव्वुफ़	=	अध्यात्म, ब्रह्म विद्या, फ़कीरी
तर्बियत	=	आध्यात्मिक शिक्षा
ताज़ीम	=	इज़्ज़त, आदर
तहारत	=	पवित्रता
तौहीद	=	अद्वैत
ताअत	=	उपासना, बन्दगी
तमा	=	लोभ
तकमील	=	पूर्णता
तवानियत	=	इतमीनान, तसल्ली
तज़कीये नफ़्स	=	इन्द्रिय दमन
तमीज़ी कुव्वत	=	विवेक शक्ति
तनहा	=	अकेला
तरदीद	=	रद्द करना
तसदीक़	=	पुष्टि करना
तरीक़े–गुफ़्तगु	=	बात चीत का ढंग
तरीक़े ज़िन्दगी	=	रहनी सहनी
तसलीम	=	मानना, झुकना
तसलीम व रज़ा	=	ईश्वर जिस हाल में रखे उसी में संतुष्ट रहना और उसका धन्यवाद देना, आत्म सर्मपण
तफ़क्कुरात (बहुवचन तफ़क्कुर का)	=	चिन्ताऐं
तुफ़ैलिया	=	आशीर्वाद पाने वाला
तहम्मुल	=	सहन शीलता, बर्दाश्त

तजल्लियात	=	रोशनियाँ, अनवार (बहुवचन नूर यानी "प्रकाश" का)
तनज़्ज़ुली	=	गिरावट
तहरीक	=	हरकत देना, किसी बात को शुरू करना, **Movement,** क्रोध, किसी काम के करने पर आमादा करना
तफ़ावत	=	फ़ासला, दुरी, फ़र्क़ जुदाई, वियोग
तजदीद–बैअत	=	Renewal of spiritual relationship, नया होना, नये सिरे से काम शुरू करना
तस्फ़िया–क़ल्ब	=	दिल की सफ़ाई
तसर्रुफ़	=	रिद्धि–सिद्धि, चमत्कार
निस्बत	=	रिश्ता (Relationship), आध्यात्मिक संबन्ध
नफ़्स कुशी	=	इन्द्रिय संयम
न्ज़ूल	=	नाज़िल होना (Descend), उतरना
नबी, नबूवत	=	पैग़म्बर, अवतार (होना) Prophet
नुक्तः शनास	=	मर्म अथवा रहस्य को समझने वाला
नजात	=	मुक्ति, मोक्ष
नाफ़रमाँ	=	अवज्ञाकारी
नफ़्स	=	मन, अन्तःकरण
नेमत	=	उपहार
नामाए आमाल	=	कर्मों का लेखा जोखा
नादिम	=	शरमिन्दा
नाबीना	=	अन्धा
नाचीज़	=	हक़ीर, तुच्छ
नसब	=	खानदान
नायब	=	प्रतिनिधि, Deputy
नसरानी मज़हब	=	ईसाई धर्म
नफ़्से अम्मारा	=	वासनाऐं जो बुराई की ओर प्रेरित करती हैं, तमोगुण
नफ़्से लव्वामा	=	रजोगुण

नफ़्से मुतमैयना	=	सतोगुण
नेस्ती	=	न होना (Nothingness)
नकहत (या निकहत)	=	खुशबु, सुगन्ध
निस्बत–क़ल्बी	=	दिली लगाव
नियत	=	Intention
नफ़ूसे इन्सानी	=	मनुष्य की आदतें
नुक़्तये सुवैदा (या सवेदा) (नफ़्से नातक़ा)	=	आज्ञा चक्र, तीसरा तिल, शिव नेत्र या शिव की तीसरी आँख, दोदल कंवल, दोनों भौंहों के बीच का हिस्सा। इसे नफ़्से नातक़ा (यानी जीवात्मा) के रहने का मुक़ाम भी कहते हैं।
नाक़िस	=	नुक़्स रखने वाला (Defective)
नफ़्सानी ख़्वाहिशात	=	काम वासनाएं
नामवरी	=	मशहूरी, शोहरत, Fame
नाक़िसुलअक़्ल	=	कम अक़्ल, बेवक़ूफ़
ना पैदा किनार	=	समुद्र या दरिया जिस का किनारा दिखाई न दे।
विशुद्धि चक्र (कण्ठ चक्र)	=	कण्ठ (टेटुंए) में स्थित है (आकाश मण्डल) इसे दुर्गा का स्थान भी कहते हैं।
वजूद	=	अस्तित्व
वही, वह्य	=	आक़ाशवाणी, ईश्वरीय संकेत
वाजिब	=	उचित
वारिस	=	उत्तराधिकारी
वाहिद	=	एक
वाक़फ़ियत	=	जानकारी
वहबी	=	बख़्शा हुआ, (Divine gift)
वज़ीफ़ा	=	जप, जाप, (Scholarship) मन्त्रोचारण, मन्त्र जाप
वुसअत	=	विशालता
वक़्तन् फ़वक़्तन्	=	समय–समय पर

वाक़्यात	=	हालात, (Events)
वारिदात (या वारदात)	=	हालात, वह हाल जो आदमी पे गुज़रे, बीती हुई, पेश आई हुई।
दीन	=	धर्म
दोज़ख़	=	नरक
दुनिया व माफ़ीहा	=	संसार तथा संसार के भीतर जो कुछ है वह सब
दर्वेश	=	फ़क़ीर
दुनिया और आक़बत	=	लोक–परलोक
दरजात	=	दशाएं (Stages)
दारैन	=	दोनों लोक (इहलोक और परलोक)
दुआ	=	प्रार्थना
दुआगो	=	प्रार्थी
दानिस्ता	=	जान बुझकर (Consciously)
दरगाह	=	दरबार
देरपा	=	स्थाई
दस्त ब दुआ	=	हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते रहना
दर हक़ीकत	=	वास्तव में
दस्तगीर	=	मदद्गार, हामी, हाथ पकड़ने वाला
हक़	=	सत्यता, अधिकार, ईश्वर
हक़ीर	=	तुच्छ
हदियः	=	भेंट
हदियाये दिल	=	दिल की भेंट
हसद	=	ईर्ष्या, जलन
हाजत	=	ज़रूरत
हमद–व–सना (हमदोसना)	=	स्तुति (परमात्मा की)
हिर्स	=	लालच
हिर्स व हवस	=	लालच और वासना
हासिद	=	ईर्ष्यालु
हैरत	=	आश्चर्य (Wonder)

हस्ती	=	अस्तित्व
हादी	=	गुरू
हवसरानी	=	इच्छा पूर्ती
हमातन	=	बिलकुल
हिम्मत अफ़ज़ा	=	साहसवर्धक
हमा मनम	=	अहम् ब्रह्म, मैं वही हूँ
हमा ओस्त	=	तत्वम् आसि, वही सब कुछ है
हब्बुल अव्वल, हब्बुल आख़िर	=	जो आरम्भ था वही अन्त है
हज़ूरी	=	सन्मुखता, ईश्वरोन्मुखता
हत्तुलमक़दूर	=	शक्ति के अनुसार, भरसक
हुसन परस्त	=	खुबसुरती का पुजारी

लनतरानी (अरबी शब्द)	=	तू मुझे नहीं देख सकता
लतीफ़	=	सूक्ष्म
लताफ़त	=	सूक्षमता
लतीफा	=	चक्र, कमल, नुक़्ता Joke
लिहाज़	=	ख़याल
लाज़िम	=	ज़रूरी, आवश्यक
लतीफ़ा–नफ़्स	=	आज्ञा चक्र
लतायफ़–जैली	=	नीचे के चक्र

हज़रत मुहम्मद साहब रसूल अल्लाह, उन के साथी, दूसरे पैग़म्बरों, फरिश्तों, तथा महान सूफ़ी सन्तों के नाम के आगे कुछ संकेताक्षरों का प्रयोग होता है, उन का अर्थ तथा संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. सल्ल० - "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" – अर्थात उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो। (Peace be on him) हज़रत मुहम्मद साहब का नाम लेते हैं या सुनते है तो आदर और प्रेम के लिये प्रार्थनार्थ यह शब्द बढ़ा देते हैं।

2. रज़ि० - "रज़ी अल्लाह अनहु" – अर्थात उन से अल्लाह राज़ी (प्रसन्न) रहे। हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल० के किसी साथी या परिवार के सदस्य के नाम के साथ आदर और प्रेम के लिये प्रार्थनार्थ यह शब्द बढ़ा देते हैं।

3. रहम० - "रहमतुल्लाहू अलैहि" – अर्थात उन पर अल्लाह की कृपा हो। महान सूफ़ी सन्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते हैं।

4. कु० सि० - "कुद्स सिर्रहु" – अर्थात उन की आदतें और स्वभाव पवित्र हों। सूफ़ी सन्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते हैं।

5. अलैहि० - "अलैहिस्सलाम" – अर्थात उन पर ईश्वर की सलामती हो। हज़रत मुहम्मद साहब स्ल्ल० के अतिरिक्त अन्य पैग़म्बरों तथा फ़रिश्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते है।